اللہ کے رسولؐ نے ارشاد فرمایا۔
میں اچھے اخلاق کو مکمل کرنے کے لئے بھیجا گیا ہوں
(مؤطہ اِمام مالک:705)

With Best Compliment from

sagar

SAGAR FEEDS & FOODS PROCESSING INDUSTRIES

Plot No. L-21, Gidc Concolim Industrial Estate
Concolim-403703 GOA
Email: sagarffpi@gmail.com

www.kanti.in

संपादक
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ वार्षिक 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ पांच वर्ष 1500/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
+91 8920589292

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
संपादक: शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 31 अंक 04 अक्तूबर 2021

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल 04
खुला ज़ेहन और लचीला मन
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
एक नई दुनिया के लिए
अब्दुर रशीद अगवान

सौंदर्य बोध 09
अच्छे बदलाव का स्वागत करें
डॉ. अबरार मुल्तानी

मुख्य स्तंभ 12
तालिबान से तालिबान तक
डॉक्टर नफ़ीस अख़्तर

विशेष 18
ज्ञान, धर्म और प्रकृति का सामंजस्य
हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह॰)

जन-गण-मन 21
जनसमस्याओं से दूरी कमज़ोर विपक्ष की निशानी
मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

ज्वलंत 25
अर्थतंत्र पर क्रॉनी कैपिटलिज़्म की पकड़
जुनैद अली

समीक्षा 31
अर्तरुल ग़ाज़ी मनोरंजन का नया मॉडल
राशिद अनवर

विश्व पटल 34
अफ़ग़ानिस्तान: साम्राज्यवादी विनाशलीला की अंतर्कथा
सैयद ख़लीक़ अहमद

इतिहास के झरोखे से 39
1857 का विद्रोह : एक समीक्षात्मक अध्ययन
सादिक़ परवेज़

कहानी 43
सामाजिक मामला
अनवर साहिल

कविताएं 45
दुखड़ा, अंधे आदमी का गीत
रेने मारिया रिल्के

कैरियर 47
समाज की सेवा करते हुए संवारें अपना भविष्य
संपादन प्रभाग

आख़िरी पन्ना 50
इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं
डॉ. फ़रहत हुसैन

मूल प्रश्न



खुला ज़ेहन और लचीला मन

खुले ज़ेहन का तात्पर्य हैं दूसरों के प्रस्तावों को सुनने की स्थिति में होना, भले ही वे हमारे मापदंड के विरुद्ध हों।

आज की दुनिया में खुले ज़ेहन के साथ सोचने और बात करने पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। हालांकि मौजूदा माहौल में यही खुलापन सबसे कठिन है। वास्तव में हम संक्रमण काल से गुज़र रहे हैं। खुले मिज़ाज व दिल वाले भी संक्रमित हो रहे हैं। एक ऐसा माहौल जहां ख़ुशगवार मूड में हम अपने मन की बात साझा कर सकें, समाप्त होता जा रहा है। इस क़दर घुटन बढ़ती जा रही है कि ठंडे मन से कुछ सोचना-बोलना भी मुश्किल हो रहा है।

ख़बरिया चैनल और सोशल मीडिया ने इस घुटन में इज़ाफ़ा किया है। न्यूज़ रूपी प्रोडक्ट बेचने के लिए एंकर्स की भड़काऊ बाज़ारी भाषा और सोशल मीडिया रूपी शेयर बाज़ार में उछाल के लिए सस्ती पोस्ट, लगातार हब्स बढ़ा रही हैं। मुद्दा राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय, खुले मन से सोचना और बोलना मुश्किल हो गया है। मामला अफ़ग़ानिस्तान का हो या फ़िलिस्तीन का, यूपी चुनाव पर बात हो रही हो या किसान आंदोलन की चर्चा...मामला सामाजिक हिंसा का हो या राजनीतिक हिस्सा का, बात धर्म और आध्यात्म की हो या फिर दर्शन और नीतिशास्त्र की, खुले मन से विचार-विमर्श की जगह ख़त्म होती जा रही है... कभी-कभी तो अहमद नदीम क़ासिमी की निम्न पंक्तियां सही लगती हैं...

देखना हद्दे नज़र से आगे बढ़कर देखना भी जुर्म है

सोचना, अपने अकीदों और यकीनों से निकल कर सोचना भी जुर्म है

आसमां-दर-आसमां असरार की परतें हटा कर झांकना भी जुर्म है

क्यों भी कहना जुर्म है, कैसे भी कहना जुर्म है।

खुले ज़ेहन से सोचने का मतलब क्या है?

खुले ज़ेहन से सोचने का अर्थ है नए विचारों और विभिन्न विचारों या दृष्टिकोणों के प्रति ग्रहणशील होना। अपनी सोच को चुनौती देना और यह विचार करना कि नए विचार आपको दुनिया के बारे में न केवल नई जानकारी दे सकते हैं, बल्कि यह आपको अपने बारे में नई बातें भी सिखा सकते हैं। यानी अपने सोचने और समझने की शक्ति को बदलने के लिए तैयार रहना। अगर आप



शिब्ली अरसलान

मुद्दा राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय, खुले मन से सोचना और बोलना मुश्किल हो गया है। मामला अफ़ग़ानिस्तान का हो या फ़िलिस्तीन का, यूपी चुनाव पर बात हो रही हो या किसान आंदोलन की चर्चा... मामला सामाजिक हिंसा का हो या राजनीतिक हिस्सा का, बात धर्म और आध्यात्म की हो या फिर दर्शन और नीतिशास्त्र की, खुले मन से विचार- विमर्श की जगह ख़त्म होती जा रही है...



अन्य विचारों और दृष्टिकोण के लिए खुले नहीं हैं, तो उन सभी कारकों को देखना मुश्किल है, जो समस्याओं में योगदान करते हैं या अपने साथ प्रभावी समाधान लेकर आते हैं। खुले ज़ेहन का तात्पर्य है दूसरों के प्रस्तावों को सुनने की स्थिति में होना, भले ही वे हमारे मापदंड के विरुद्ध हों।

खुले ज़ेहन के मार्ग की रुकावटें...

1) **अज्ञात से डर**-अरबी भाषा में एक कहावत है कि इंसान जिसे नहीं जानता अर्थात् जो अज्ञात है, उसे वो शत्रु मान लेता है, फिर वो उस अज्ञात शत्रु से अकारण डरता रहता है।

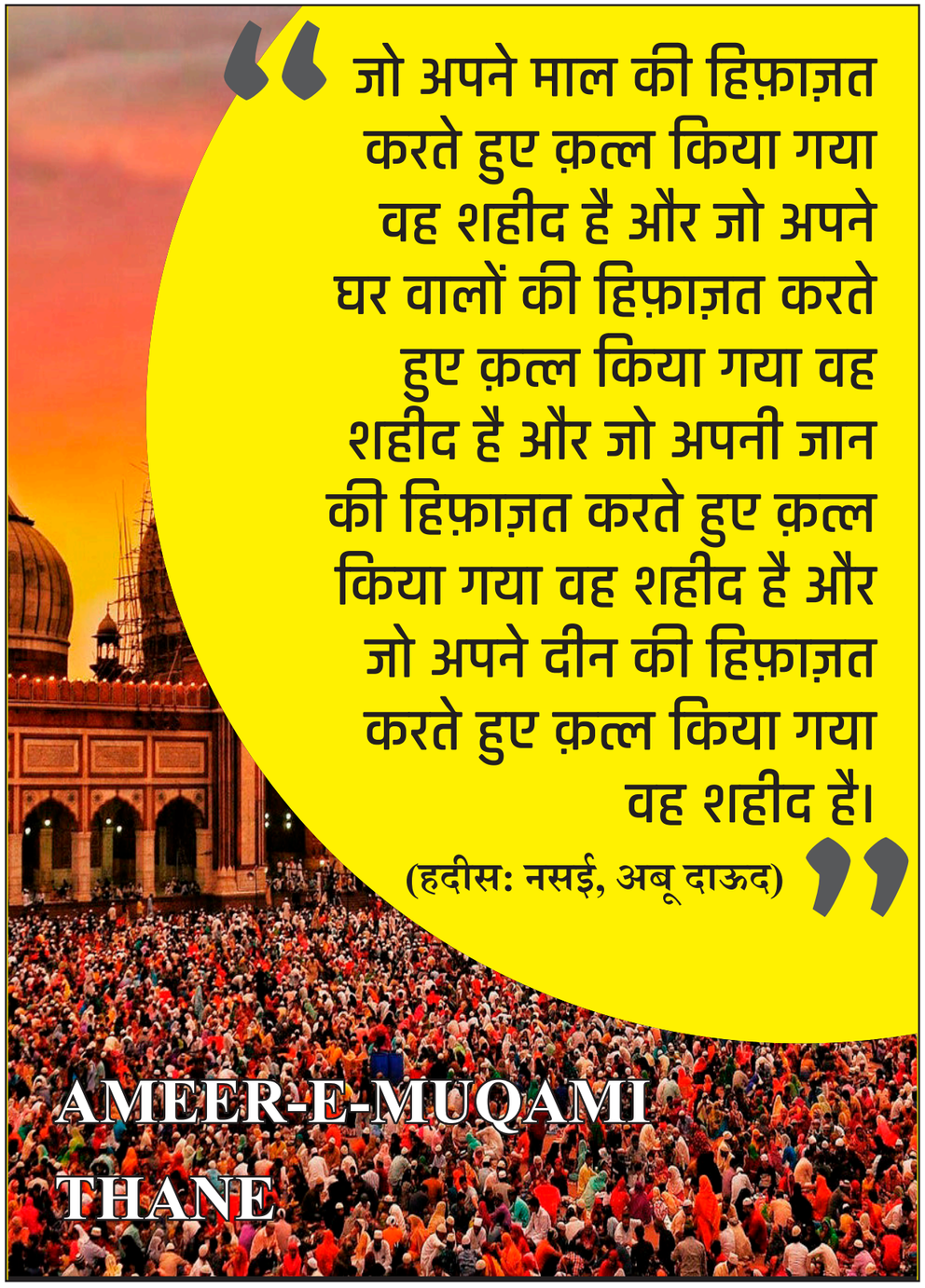
2) **यथास्थितिवाद**-कम्फर्ट ज़ोन में रहने का मानव स्वभाव उसे यथास्थितिवादी बना देता है, फिर वो कोई परिवर्तन नहीं चाहता, उनके पास अपने मन को बदलने और दूसरों के विचारों पर गंभीरता से विचार करने की क्षमता नहीं रहती।

3) **पूर्वाग्रह**-ये दुनिया पूर्वाग्रहों से भरी पड़ी है, दूसरे धर्म, समुदाय और समूहों के बारे में तरह-तरह के पूर्वाग्रह... चुनावी राजनीति इन पूर्वाग्रहों को ख़त्म होने नहीं देती, बल्कि इसका पोषण करती है, साम्प्रदायिक उन्माद की फ़िज़ा पैदा करके पूर्वाग्रहों को बढ़ाती है। खुले ज़ेहन और खुले मन से सोचने की राह में सब से बड़ी रुकावट ये पूर्वाग्रह की फ़िज़ा है।

अंत में,

यदि हम व्यक्तिगत रिश्तों में, व्यवसाय में और सामान्य रूप से जीवन में सफलता के लिए अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग करना चाहते हैं, तो एक खुला, लचीला मन होना ज़रूरी है अगर आप खुले ज़ेहन के हैं, तो नए विचार आपको नए अवसर देंगे। कुछ नया करने के लिए विचारों में भी नयापन होना ज़रूरी है और यह तभी होगा, जब नए विचारों का सम्मान करेंगे। ईश्वर ने हमें दो-दो आंखें इसलिए दी हैं ताकि हम जड़ मानसिकता और बंद दिमाग़ के न हों... "क्या अंधा और आंखों वाला बराबर हो सकता है या यह कि कहीं अंधेरा और उजाला बराबर हुआ है?"

(क़ुरआन, सूरा रअद : 16)



चिंतन



अब्दुर रशीद
अगवान

एक नई दुनिया के लिए



यह क़रीब चालीस साल पहले की बात है।

हमारी डीम्ड यूनिवर्सिटी में किसी धार्मिक गुरु का एक भाषण था और सभी फैकल्टी मेंम्बर्स के साथ मैं भी मौजूद था। मैं उनके प्रवचन का बस कुछ हिस्सा सुन पाया और फिर मेंरा मन न जाने कहां खो गया। वो हिस्सा आज तक मुझे याद है।

वो कह रहे थे, “मनुष्य को उदार होना चाहिए और अपने-अपने दायरों के पार देखना चाहिए। हमारा सबसे पहला दायरा परिवार का है। उसके बाद का दायरा समाज का है और फिर राष्ट्र का। हम पर परिवार का अधिकार समाज के अधिकार से कम है और इन दोनों से राष्ट्र का अधिकार सबसे ज़्यादा है।”

मैं सोच रहा था कि अब वे पूरी मानवता के अधिकार के बारे में भी कुछ बोलेंगे और बताएंगे कि हमारा अस्ल दायरा मानवता ही है। मगर ऐसा नहीं हुआ। मैं इसी पर ग़ौर करता रहा कि उन्होंने ऐसा क्यों नहीं कहा? और उनका बाक़ी का भाषण मेंरे कानों के अंदर पहुंच ही नहीं सका।

दरअस्ल हमारी ट्रेनिंग ही ऐसी होती है कि हम मानवता को एक परिवार के रूप में नहीं देख पाते। कभी-कभी हमें याद आ जाता है या याद दिलाया जाता है कि “वसुधैव कुटुंबकम्” या “अयालुल्लाह” (यानी संपूर्ण मानवता एक ही परिवार है) भी ज़िन्दगी की एक अहम हक़ीक़त है और उन दायरों से ऊपर है जो हमारे लिए अहम तो हैं मगर मानवता के नुक़सान की क़ीमत पर नहीं। मगर मानवता के विशाल समुद्र की इस लहर पर सवार होने के थोड़ी ही देर बाद डर कर या आदत से मजबूर होकर हम अपनी पुरानी महदूद दुनिया में लौट जाते हैं।

नस्ल, रंग, जाति, राष्ट्रीय स्वार्थ और निजी आस्था के नाम पर अक्सर लोग इतने अंधे हो जाते हैं कि मानवता शर्मसार हो जाती है। इसकी बुनियादी वजह यही है कि हमें इन दायरों में रहने की आदत हो गई है। जो देश या राष्ट्र अपने आपको विकसित कहते हैं वे चाहते हैं कि बाक़ी देश या राष्ट्र

नस्ल, रंग, जाति, राष्ट्रीय स्वार्थ और निजी आस्था के नाम पर अक्सर लोग इतने अंधे हो जाते हैं कि मानवता शर्मसार हो जाती है। इसकी बुनियादी वजह यही है कि हमें इन दायरों में रहने की आदत हो गई है। जो देश या राष्ट्र अपने आपको विकसित कहते हैं वे चाहते हैं कि बाक़ी देश या राष्ट्र अविकसित ही रहें। जो जातियां संगठित होकर आगे निकल गई हैं वे चाहती हैं कि पिछड़ी जातियां कभी आगे न बढ़ पाएं।

अविकसित ही रहें। जो जातियां संगठित होकर आगे निकल गई हैं वे चाहती हैं कि पिछड़ी जातियां कभी आगे न बढ़ पाएं। ताक़तवर गोरी नस्ल के लोग दूसरे रंग के लोगों पर ज़ुल्म को नेकी समझने लगते हैं और जहां काले लोगों का बहुमत है वहां गोरे रंग के लोगों की ज़िन्दगी आसान नहीं होती। आज यह हर तरफ़ हो रहा है कि एक नस्ल दूसरी नस्ल पर, एक जाति दूसरी जाति पर, एक देश दूसरे देश पर, और एक आस्था दूसरी आस्था पर इस तरह हमलावर हो रहे हैं कि लोग अपने घोषित आदर्शों को भी भूल जाते हैं।

हाल तो यह है कि सभ्यता और ऊंचे मूल्यों की बात करने वाले समाज आगे बढ़कर पूरी मानवता को उन मूल्यों के लिए न तैयार करते हैं और न उनके मुताबिक़ उनको अधिकार ही देते हैं। मिसाल के तौर पर पहले ईस्ट इंडिया कंपनी और फिर ब्रिटेन ने उसकी हिमायत में क़रीब 90 साल तक भारत में हुकूमत की, मगर उसने यहां ब्रिटेन की तरह लोकतंत्र को आम करने की कोई कोशिश नहीं की। अमेरिका चालीस साल तक अफ़ग़ानिस्तान पर हावी रहा मगर उसने वहां लोकतंत्र को मज़बूत करने के लिए शायद ही कुछ किया हो। यही हाल दूसरे देशों को अपना उपनिवेश-ग़ुलाम देश-बनाने वाले फ्रांस, नीदरलैंड, पोलैंड, इटली वग़ैरह



का रहा है। इससे इन्कार नहीं है कि वहां स्थानीय लोगों का समर्थन हासिल करने के लिए कुछ संस्थाएं खड़ी की गईं, मगर उनका मक़सद लोगों की आज़ादी न होकर उनकी ग़ुलामी को लंबे वक़्त तक जारी रखना था। यह अलग बात है कि मानव सभ्यता के लिए बेहतर उसूलों को ग़ुलाम देशों के लोगों ने ख़ुद सीख कर अपनाना शुरू किया और एक लंबे संघर्ष के बाद ख़ुद को आज़ाद भी कर लिया। दुनिया में बढ़ती लोकतांत्रिक व्यवस्था आमतौर पर लोगों ने ख़ुद अपनाई है न कि उन्हें बड़े लोकतांत्रिक देशों ने सिखाई है। उनका बस चलता तो वे ग़ुलाम देशों को कभी आज़ाद ही नहीं होने देते।

यह सब इसलिए होता रहा है क्योंकि नस्लवाद, राष्ट्रवाद, रंगभेद, संस्कृति, भाषा वग़ैरह का चश्मा लग जाने के बाद या तो इंसानियत नज़र ही नहीं आती है या फिर धुंधली-सी दिखाई देती है।■■

सौंदर्य बोध



डॉ. अबरार मुल्तानी

अच्छे बदलाव का स्वागत करें

शाहरुख़ ख़ान की फ़िल्म के गाने के बोल हैं-'हर घड़ी बदल रही है रूप ज़िंदगी...।' मैंने अपनी किताब 'बीमारियां हारेंगी' में एक बात अपने पाठकों को समझाई थी कि, 'हम रोज़ जीते हैं और रोज़ मरते हैं'। यह भी सत्य है कि हम एक बार फाइनली मर जाते हैं, लेकिन हम एक ही बार मरते हैं, यह आधा सच है। क्योंकि, हमारे शरीर की करोड़ों कोशिकाएं रोज़ मरती हैं और रोज़ ही उनकी जगह करोड़ों नई कोशिकाएं ले लेती हैं। त्वचा की जो परत आप पर आज चढ़ी हुई है यह वह नहीं है जो बचपन में आपको ढके हुए थी। यह तो हर कुछ महीनों में बिल्कुल नई हो जाती है, आपको बताए बिना। हमारे शरीर का खोल बदलता है, हमारा ख़ून बदलता है, हमारा गोश्त बदलता है, हमारी हड्डियां बदलती हैं और हमारे विचार तो हम जानते ही हैं कि बदलते ही हैं। जिन चीज़ों से हमें बचपन में प्रेम होता है उनसे हम युवावस्था में प्रेम नहीं करते। कितने लोगों को बचपन में



प्रिय कंचे या खिलौने अब भी प्रिय हैं बताइए?

आरम्भिक दार्शनिकों में से एक हिरेकलिट्स का यह दर्शन था कि, हर चीज़ बहती हुई अवस्था में है। हर चीज़ निरंतर परिवर्तनशील और गतिशील है। सदा एक ही बनी रहने वाली कोई भी चीज़ संसार में नहीं है। वे एक बहुत ही सुंदर बात कहते थे कि, "हम उस नदी में दूसरी बार पैर नहीं रख सकते, क्योंकि जब मैं दूसरी बार उस नदी में पैर रखता हूं तो न तो मैं और न ही नदी पहले जैसी होती है।" दूसरे ही पल नदी भी बदल गई और हम भी।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो वाक़ई हम हर पल बदल रहे होते हैं। किसी से मिलने के पहले हम कुछ और होते हैं और किसी से मिलने के बाद कुछ और। कुछ पढ़ लेने के बाद हम कुछ और बन जाते हैं, कुछ सीख लेने के बाद हम कुछ और। किसी फूल को सूंघने से पहले हम अलग होते हैं और उसकी ख़ुशबू लेने के बाद कुछ और। हमारे मन-मस्तिष्क और शरीर में निरंतर परिवर्तन चलते रहते हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि जो व्यक्ति आप 10 साल पहले थे वही अब भी हैं। कक्षा 10 का विद्यार्थी कक्षा 11 में आकर बदल जाता है। वह वह नहीं रहता जो पिछली कक्षा में था। हो सकता है कि आपका नाम न बदला हो आपका काम न बदला हो, लेकिन आप वह नहीं रहे।

यह भ्रम है कि नाम का न बदलना मतलब हम वही हैं। इसलिए कई गुरु अपने शिष्यों को यह बतलाने के लिए कि वे अब नए हो गए हैं उनका नाम बदल देते हैं। या कई लोग जीवन में परिवर्तन को महसूस करके अपना नाम या उपनाम बदल डालते हैं।

कई बार हम देखते हैं कि किसी दृश्य को देखकर हमारा हृदय परिवर्तित हो जाता है जैसे-अशोक का युद्ध में हज़ारों हज़ार लाशें देखकर हुआ था। कई बार हम कोई बात सुनकर परिवर्तित हो जाते हैं जैसे-अरस्तु की बातें सुनकर सिकंदर और कौटिल्य की बात सुनकर चन्द्रगुप्त हुआ था। दृश्य और शब्द हमें बदल देते हैं। शब्द या दृश्य में से कौन ज़्यादा शक्तिशाली है यह एक बहस का मुद्दा है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इस शाश्वत सत्य को हमें स्वीकार करना चाहिए। हमें अपने आप को टटोलते रहना चाहिए कि हम परिवर्तित हुए हैं तो यह परिवर्तन कैसा है, अच्छा है या बुरा है? स्वास्थ्य के स्तर पर तथा दर्शन और अध्यात्म के स्तर पर भी। व्यक्तिगत स्तर पर और सामाजिक स्तर पर भी। हम क्या बन रहे हैं या क्या बन गए हैं? यह जानना हमारा पहला कर्तव्य है। यदि हम एक सुगन्धित पुष्प बन रहे हैं अपने लिए भी और समाज के लिए भी तो यह परिवर्तन अच्छा है। लेकिन, हम यदि कांटा बन रहे हैं, एक भ्रमित भीड़ का हिस्सा बन रहे हैं, समाज और दुनिया को तबाह करने वाले या नोच लेने वाले भेड़िए बन रहे हैं तो सावधान हो जाइए। इस परिवर्तन को यहीं पर रोक दीजिए और अपने परिवर्तन की दिशा को सकारात्मक मोड़ दीजिए।

चूंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है इसलिए हर व्यक्ति अपने आपको किसी भी वक़्त बदल सकता है। यदि आप अपने परिवर्तन को नहीं देखेंगे, उसे नियंत्रित नहीं करेंगे तो फिर कोई और उसे नियंत्रित करेगा। और जब आपको कोई अपने अनुसार बदलेगा तो निश्चित ही वह अपने लाभ के लिए आपको बदलेगा, आपके लाभ के लिए नहीं। अच्छे बदलाव, अच्छे होते हैं।■■

आरम्भिक दार्शनिकों में से एक हिरेकलिट्स का यह दर्शन था कि, हर चीज़ बहती हुई अवस्था में है। हर चीज़ निरंतर परिवर्तनशील और गतिशील है। सदा एक ही बनी रहने वाली कोई भी चीज़ संसार में नहीं है। वे एक बहुत ही सुंदर बात कहते थे कि, "हम उस नदी में दूसरी बार पैर नहीं रख सकते, क्योंकि जब मैं दूसरी बार उस नदी में पैर रखता हूं तो न तो मैं और न ही नदी पहले जैसी होती है।" दूसरे ही पल नदी भी बदल गई और हम भी।

ADVANCE HEART CARE CENTRE PRIVATE LIMITED

Advance Heart Care Centre Private Limited is a Private incorporated on 12 February 2018. It is classified as Non-govt company and is registered at Registrar of Companies, Mumbai. Its authorized share capital is Rs. 100,000 and its paid up capital is Rs. 100,000. It is inolved in Social work activities

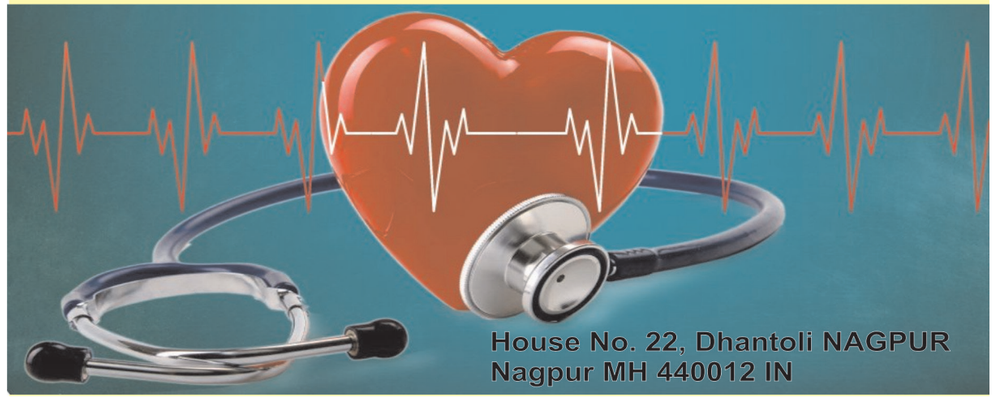
Advance Heart Care Centre Private Limited's Annual General Meeting (AGM) was last held on 30 September 2019 and as per records from Ministry of Corporate Affairs (MCA), its balance sheet was last filed on 31 March 2019.





Directors of Advance Heart Care Centre Private Limited are Sumera Mehreen Aziz Khan and Mohd Aziz Islamullah Khan.

Advance Heart Care Centre Private Limited's Corporate Identification Number is (CIN) U85300MH2018PTC304990 and its registration number is 304990.
Its Email address is rncongp2@gmail.com and its registered address is House No. 22, Dhantoli NAGPUR Nagpur MH 440012 IN ,
Current status of Advance Heart Care Centre Private Limited is - Active.





मुख्य स्तंभ

डॉक्टर नफ़ीस अख़्तर

तालिबान से तालिबान तक

अफ़ग़ान तालिबान के विरुद्ध दो दशकों के अमेरिकी युद्ध में लगभग एक लाख सत्तर हज़ार लोग मारे गए, जिनमें ढाई हज़ार के लगभग अमेरिकी सैनिक, चार हज़ार अमेरिकी कान्ट्रेक्टर, अफ़ग़ान नेश्नल आर्मी के 66 हज़ार सैनिक, गठबंधन सेनाओं के बारह सौ जवान, 47 हज़ार आम नागरिक और 51 हज़ार तालिबान शामिल हैं। इसके अलावा मानवाधिकार संगठनों के लगभग पांच सौ कार्यकर्ता और 70 से अधिक पत्रकारों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी है। लाखों अफ़ग़ान नागरिकों को देश छोड़कर विदेशों में शरणार्थी जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ा।

अमेरिका ने इस जंग में अमेरिकी करदाताओं के दो ट्रीलियन डॉलर के क़रीब झोंक दिए। लेकिन इन सबसे मिला क्या? जिन तालिबान को सत्ता से हटाने के लिए इतनी लंबी और महंगी जंग लड़ी गई अफ़ग़ानिस्तान की सत्ता पर फिर से उन्हीं का नियंत्रण है। यानी 40 देशों की सेना ने इतना कुछ गंवाने के बाद 20 सालों में केवल तालिबान से तालिबान तक की यात्रा की है। बल्कि तालिबान अपनी पहली पारी की तुलना में इस बार अधिक मज़बूती और नियंत्रण शक्ति के साथ वापस आए हैं। पंजशीर का वह प्रांत भी अब उनके क़ब्ज़े में है जो नव्वे के दशक में उनके नियंत्रण के बाहर उनके लिए एक चुनौती बना रहा था। बल्कि उत्तर मध्य अफ़ग़ानिस्तान में स्थित इस इलाक़े पर तो सोवियत संघ भी क़ाबिज़ न हो सका था। मगर अब उसके समेत पूरा अफ़ग़ानिस्तान तालिबान के कंट्रोल में है।

अमेरिकी संरक्षण में पल रही सरकार और सेना में शामिल होने वालों में कोई विज़न या इक्षाशक्ति नहीं थी वे केवल अपना भविष्य बनाने आते थे इसी लिए भ्रष्टाचार क़ाबू से बाहर था और अमेरिकी बजट और विदेशी सहायता का बड़ा हिस्सा भ्रष्टाचार में हजम हो जाता था। अफ़ग़ान सेना अमेरिकी वायु सेना के सहारे के बिना कोई आप्रेशन भी कर पाने की क्षमता अपने अंदर पैदा न कर सकी थी।

अमेरिकी यह कहकर अपनी पीठ थपथपा सकते हैं कि वे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला करने वाले अल-क़ायदा को भारी छति पहुंचाने के साथ-साथ उसके मुखिया को भी मौत के घाट उतारने में कामयाब रहे और तालिबान को यह वादा करने पर मजबूर कर दिया कि वे अफ़ग़ानिस्तान को अल-क़ायदा जैसे आतंकवादी संगठनों की शरण-स्थली नहीं बनने देंगे और यह कि अफ़ग़ानिस्तान की भूमि किसी अन्य देश के विरुद्ध षड्यंत्र अथवा हमले के लिए इस्तेमाल नहीं होगी। लेकिन वास्तविकता यह है कि अफ़ग़ानिस्तान में अमेरिका का उद्देश्य इतना भर नहीं था। वह तालिबान को किसी भी हाल में सत्ता में वापस नहीं आने देना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने अफ़ग़ान नेश्नल आर्मी का गठन किया था और उन्हें सैन्य प्रशिक्षण और आधुनिक शस्त्र प्रदान किया था।

अमेरिकी यह कहकर अपनी पीठ थपथपा सकते हैं कि वे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला करने वाले अल-क़ायदा को भारी छति पहुंचाने के साथ-साथ उसके मुखिया को भी मौत के घाट उतारने में कामयाब रहे और तालिबान को यह वादा करने पर मजबूर कर दिया कि वे अफ़ग़ानिस्तान को अल-क़ायदा जैसे आतंकवादी संगठनों की शरण-स्थली नहीं बनने देंगे और यह कि अफ़ग़ानिस्तान की भूमि किसी अन्य देश के विरुद्ध षड्यंत्र अथवा हमले के लिए इस्तेमाल नहीं होगी। लेकिन वास्तविकता यह है कि अफ़ग़ानिस्तान में अमेरिका का उद्देश्य इतना भर नहीं था। वह तालिबन को किसी भी हाल में सत्ता में वापस नहीं आने देना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने अफ़ग़ान नेश्नल आर्मी का गठन किया था और उन्हें सैन्य प्रशिक्षण और आधुनिक शस्त्र प्रदान किया था।

अमेरिका द्वारा प्रशिक्षित और सायुध एक लाख पचासी हज़ार की सेना और एक लाख से अधिक पुलिस व पैरामिलिट्री बलों का हाल यह रहा कि अमेरिका के अफ़ग़ानिस्तान से निकलते ही तालिबान किसी प्रतिरोध के बिना पूरे अफ़ग़ानिस्तान पर क़ब्ज़ा हासिल कर ले गए और अफ़ग़ान नेश्नल आर्मी इतिहास बनकर रह गई। अफ़ग़ानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ़ ग़नी समेत अफ़ग़ान सरकार के अधिक्तर मंत्री और पदाधिकारी देश से फ़रार हो गए। कारण यह था कि अमेरिकी संरक्षण में पल रही सरकार और सेना में शामिल होने वालों में कोई विज़न या इक्षाशक्ति नहीं थी वे केवल अपना भविष्य बनाने आते थे इसी लिए भ्रष्टाचार क़ाबू से बाहर था और अमेरिकी बजट और विदेशी सहायता का बड़ा हिस्सा भ्रष्टाचार में हजम हो जाता था। अफ़ग़ान सेना अमेरिकी वायु सेना के सहारे के बिना कोई आप्रेशन भी कर पाने की क्षमता अपने अंदर पैदा न कर सकी थी।

तालिबान के मुक़ाबले में हथियार डाल देना उनके लिए एक सामान्य बात हो गई थी। अफ़ग़ान सरकार भी जनता में कोई लोकप्रिय सरकार न थी। वह जिस चुनावी प्रक्रिया से चुनकर आती थी उसमें अवाम की स्वतंत्र हिस्सेदारी हमेशा सवालों के घेरे में रही है। ख़ुद अमेरिकी सेना के लिए तालिबान के विरुद्ध ज़मीनी आप्रेशन कर उनका सफ़ाया करना संभव नहीं था। अमेरिकी वायु सेना ने यद्यपि डेज़ीकटर और पहाड़भेदी ख़तरनाक बमों का प्रयोग किया लेकिन इससे तालिबान से कहीं ज्यादा आम नागरिकों को जान व माल की अपूरणीय क्षति का सामना रहा है। स्थिति पूर्णरूप से अमेरिका के नियंत्रण से बाहर थी और उसके लिए दोहा कतर में तालिबान के साथ फ़रवरी 2020 में संधि करके अपने लिए सुरक्षित निकासी का मार्ग ढूंढने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था। हां यह कहना ग़लत होगा कि इस असफलता ने अमेरिका के सुपर पावर होने का स्थान छीन लिया है।

वास्तव में अमेरिका अब भी सर्वश्रेष्ठ आर्थिक एवं सैन्य शक्ति है। अभी



किसी भी मायने में अमेरिका का सूर्यास्त नहीं हुआ। विश्व में किसी के लिए भी अमेरिका को सैनिक चुनौती देना अब भी आसान नहीं है। लेकिन 1945 के बाद से कोरिया, वियतनाम, खाड़ी, अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, सोमालिया, यमन और लीबिया में अमेरिका ने जो भी छोटे-बड़े युद्ध किए उनमें खाड़ी के युद्ध को छोड़कर हर जगह उसे नाकामी ही हाथ लगी है। मित्र देशों के साथ भी उसका व्यवहार अच्छा नहीं रहा है। इन सबका परिणाम यह हुआ है कि अब विश्व राजनीति में अमेरिका धीरे-धीरे अपना स्थान खो रहा है। नई गोलबंदिया अस्तित्व में आ रही हैं, जिसका एक उदाहरण यह है कि अभी 24 अगस्त को सऊदी अरब के उपरक्षा मंत्री ख़ालिद बिन सलमान ने रूस के साथ सैन्य सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह घटना क्रम दर्शाता है कि अब सऊदी अरब जैसे अमेरिका के मित्र रहे देश भी अमेरिका पर केंद्रित नहीं रहना चाहते हैं।

दूसरी तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान के लिए भी चुनौतियां कम नहीं है। इन बीस सालों में अफ़ग़ानिस्तान का जो हाल हुआ है उसकी ज़िम्मेदारी उनपर भी है, क्योंकि अमेरिका ने जिस 9/11 की आतंकवादी घटना के बाद ताक़त के नशे में अफ़ग़ानिस्तान को तहस-नहस किया उसका षड्यंत्र करने वाले संगठन अल-क़ायदा और उसके मुखिया बिन लादेन को तालिबान ने ही अपने यहां शरण दे रखी थी। हमले में यद्यपि कोई तालिबान नहीं था सबके सब अरब थे, लेकिन हमले का ताना-बाना अफ़ग़ानिस्तान में ही बुना गया था इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। स्वयं बिन लादेन ने 2005 में अल-जज़ीरा पर जारी अपने एक वीडियो संदेश में इस हमले की ज़िम्मेदारी ली थी। तकनीकि रूप से वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के ध्वस्त होने के तरीक़े के बारे में जो प्रश्न उठाए जाते हैं विशेषज्ञ उन्हे सही नहीं मानते हैं और पूरे प्रकरण की वैज्ञानिक व्याख्या देते हैं। इसलिए यह हमला अल-क़ायदा ने ही किया था यह लगभग सर्वमान्य तथ्य बन चुका है।

यह सही है कि अमेरिका ने अफ़ग़ानिस्तान पर सैन्य आक्रमण के लिए न्यायोचित तरीक़ा नहीं अपनाया था, लेकिन ताक़त के नशे में मस्त अमेरिका को अपनी साख बहाल करने का यही रास्ता सूझा जिसकी क़ीमत भी उसे चुकानी पड़ी।

तालिबान ने दोहा संधि में यह वादा किया है कि वे दोबारा अफ़ग़ानिस्तान

तालिबान ने अंतरिम सरकार का गठन करते हुए जो 33 सदस्यीय मंत्रीमण्डल बनाया है प्रधानमंत्री मुल्ला हसन अख़ुन्द सहित उनमें से आधे यानी सत्तरह सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ब्लेक लिस्टेड हैं। तालिबान के लिए उनको ब्लैक लिस्ट से निकलवाना अथवा उन्हें सरकार से बाहर करना दोनों आसान नहीं है। अमेरिका ने अफ़ग़ानिस्तान के साढ़े नौ अरब डॉलर फ्रीज कर दिए हैं ।

को आतंकवादी संगठनों की शरण-स्थली नहीं बनने देंगे और न ही अफ़ग़ानिस्तान की भूमि को किसी अन्य देश के विरुद्ध इस्तेमाल होने देंगे। ऐसे में तालिबान के सामने विश्व समुदाय की ओर से सिर्फ़ अल-क़ायदा नहीं बल्कि आईएसआईएस, ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंन्ट, इस्लामिक मूवमेंन्ट ऑफ़ उज़बेकिस्तान और टीटीपी के ख़िलाफ़ एक्शन लेने के लिए दबाव है, जो उनके लिए आसान नहीं, क्योंकि इनमें से कई एक ने इस 20 वर्षीय युद्ध में तालिबान के साथ मिलकर हिस्सा लिया है। लेकिन यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो विश्व समुदाय की तरफ़ से न सिर्फ़ यह कि उन्हें मान्यता नहीं मिलेगी, बल्कि उन्हें आर्थिक प्रतिबंधों का समाना भी करना पड़ सकता है, जो आर्थिक रूप से लगभग दिवालिया हो रहे देश के लिए बहुत दुष्परिणामी सिद्ध होगा।

अभी तो हाल यह है कि तालिबान ने अंतरिम सरकार का गठन करते हुए जो 33 सदस्यीय मंत्रीमण्डल बनाया है प्रधानमंत्री मुल्ला हसन अख़ुन्द सहित उनमें से आधे यानी सत्तरह सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ब्लेक लिस्टेड हैं। तालिबान के लिए उनको ब्लैक लिस्ट से निकलवाना अथवा उन्हें सरकार से बाहर करना दोनों आसान नहीं है। अमेरिका ने अफ़ग़ानिस्तान के साढ़े नौ अरब डॉलर फ्रीज कर दिए हैं ।



यदि तालिबान अमेरिका की मांगों को स्वीकार करते हैं तो ख़ुद उनके संगठन में फूट पड़ जाएगी और यदि नहीं मानते हैं तो साढ़े नौ अरब डॉलर से वंचित होने के साथ आर्थिक प्रतिबंधों से दोचार होना पड़ेगा। देश इस समय अनाज की कमी का बुरी तरह शिकार है। आधी आबादी के पास खाने के लिए कुछ नहीं है। अस्पतालों में दवाएं और स्टाफ नहीं है। स्कूल ख़ाली पड़े हैं। सरकारी कर्मचारियों को वेतन देने के लिए धन नहीं है।

पिछले साल का सरकारी ख़र्च 11 अरब डॉलर के बराबर था जोकि अधिक्तर विदेशी सहायता पर निर्भर था। निर्यात केवल एक अरब डॉलर के आसपास है और कुछ कच्चे निर्यात के अतिरिक्त अफ़ग़ानिस्तान के पास दुनिया को बेचने के लिए कुछ भी नहीं है। अब आर्थिक बदहाली से देश को निकालना तालिबान के सामने एक बड़ा चैलेंज है। आर्थिक रूप से रूस, चीन, पाकिस्तान और ईरान विकल्प हो सकते हैं, लेकिन यह देश भी सशर्त संबंध बनाने पर ही सहमत हैं। रूस इस्लामिक मूवमेंन्ट ऑफ उज़्बेकिस्तान चीन ईस्ट तुर्किस्तान मूवमेंन्ट और पाकिस्तान टीटीपी पर त्वरित प्रतिबंध लगाने की मांग कर रहा

विश्व समुदाय की एक मांग समावेशी सरकार का गठन हैं जिसमें देश के सभी नस्ली समूहों तथा महिलाओं का प्रतिनिधित्व हो। तालिबान ने इसका वादा भी किया था। अंतरिम सरकार के गठन जिसमें विस्तार की संभावना है से यह संकेत मिलता है कि तालिबान समावेशी सरकार का वह अर्थ नहीं लेते जो विश्व समुदाय का अभिप्राय है।



है। ईरान तालिबान के बीच अपनी पसंद के लोगों को सरकार में शामिल कराना चाहता है।

विश्व समुदाय की एक मांग समावेशी सरकार का गठन है जिसमें देश के सभी नस्ली समूहों तथा महिलाओं का प्रतिनिधित्व हो। तालिबान ने इसका वादा भी किया था। अंतरिम सरकार के गठन जिसमें विस्तार की संभावना है से यह संकेत मिलता है कि तालिबान समावेशी सरकार का वह अर्थ नहीं लेते जो विश्व समुदाय का अभिप्राय है।

तालिबान के लिए समावेशी सरकार का मतलब केवल अपने ग्रुप से ही कुछ एक ग़ैर-पख्तून व्यक्तियों को शामिल कर लेना है। शायद वे अपने ग्रुप से बाहर किसी को भी सरकार में शामिल करने के लिए तैयार नहीं है। इन्होंने अपनी 33 सदस्यों की कैबिनेट में अभी तक किसी महिला को शामिल नहीं किया है। 33 में से केवल 2 ग़ैर-पख्तून हैं, एक उज़्बेक और एक ताजिक और यह दोनों भी तालिबान के अपने संगठन के सदस्य हैं। हज़ारा और अन्य अल्पसंख्यकों को कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है।

तालिबान के यहां लोकतंत्र या आम चुनाव की संभावना नग्न ही प्रतीत होती है। इसीलिए उन्होंने इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ़ अफ़ग़ानिस्तान का नाम बदलकर फिर से इस्लामिक अमीरात ऑफ़ अफ़ग़ानिस्तान रख दिया है। इस्लामी दुनिया के एक बड़े वर्ग में आज भी लोकतंत्र को लेकर स्पष्टता नहीं है। इस्लामिक रिवाइवल के लिए संघर्षरत अधिक्तर रूढ़िवादी विचारधारा रखने वाले लोग लोकतंत्र के बजाय शूरा तंत्र को पसंद करते हैं जिससे उनका तात्पर्य एक ऐसे परिषद से है जो राज्य के मुखिया को सलाह व मश्विरा और सहायता देने का कार्य करे और जिसके सदस्यों के चुनाव में आम जनता की कोई भूमिका नहीं होती है। यह विचारधारा क़ुरआन के बजाय मध्यकाल की मुस्लिम शासन प्रणाली से ली गई है। तालिबान भी अधिक्तर इसी रूढ़िवादी विचारधारा के समर्थक हैं। इसलिए इसकी उम्मीद बहुत कम है कि वे लोकतंत्र या सबको मताधिकार देने की तरफ़ कुछ विचार करेंगे।

महिला अधिकारों को लेकर उनपर पहले भी प्रश्न उठते रहे हैं। अपनी पहली पारी में उन्होंने महिला अधिकारों की अंदेखी की भी थी। इस बार तालिबान प्रवक्ताओं ने यह आश्वासन दिया है कि इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार महिलाओं को नौकरी व शिक्षा समेत अन्य अधिकार देंगे। लेकिन हनफ़ी देवबंदी विचारधारा के अनुसार इस्लाम की उनकी व्याख्या कैसी होगी और क्या महिलाओं को उच्च पदों पर स्थान दिया जाएगा यह देखने योग्य बात होगी।

ज़ाहिरी तौर पर इस संबंध में उनसे अधिक आशाएं रखने का कोई कारण नहीं दिखता है। नई अफ़ग़ान नस्ल इन बीस वर्षों में मोबाइल फ़ोन, टीवी चैनल्ज़ और पश्चिमी दुनिया के संपर्क में आकर समाजी संदर्भ में काफ़ी बदल चुकी है। तालिबान इस नई नस्ल को यदि अपने समाजी फ्रेम में फिट करने की कोशिश करेंगे तो वे देश से भागेंगे या किसी न किसी मोड़ पर बग़ावत करेंगे और यदि तालिबान उनके और विश्व समुदाय के अनुसार अपनी पालीसियां बनाते हैं तो स्वयं उनके बीच बग़ावत का ख़तरा होगा। कहा जाता है कि तालिबान काफ़ी हद तक बदल चुके हैं लेकिन ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह बदलाव विचारधारा का बिल्कुल भी नहीं है, हां यह ज़रूर है कि वे अब काफ़ी अनुभवी हो गए हैं। विश्व समुदाय से मामला करने में अब वे अधिक क्षमता दर्शाते हैं, जिसका एक उदाहरण है कि तालिबान प्रवक्ता ज़बीहुल्लाह मुजाहिद ने विश्व समुदाय से आतंकवाद, ओपियम और अफ़ग़ान शरणार्थियों की समस्या के समाधान हेतु सहयोग मांगा है। यह गेंद को विश्व समुदाय के पाले में डालकर अपनी कमज़ोरियों को साधन के रूप में इस्तेमाल करने की बहुत अच्छी मिसाल है।

अफ़ग़ानिस्तान के घटनाक्रम का प्रभाव भारत समेत दुनिया भर में फैले मुसलमानों के एक बड़े वर्ग के मानस पटल पर भी दिखाई दे रहा है। हर अंतर्राष्ट्रीय घटना में इस्लाम के विजयी होने और मुसलमानों के शानदार अतीत के वापस लौट आने की संभावना देखने की उनकी कमज़ोरी यहां भी उभर आई है। उत्साहपूर्वक वे तालिबान के समर्थन में मीडिया और सोशल मीडिया पर इतना आगे निकल जाते हैं कि दुनिया इन्हें उसी रूढ़िवादी चरमपंथी विचारों का धारक मानने पर विवश हो जाती है। विशेषकर भारत में उनकी इस नवीनतम छवि ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने और ध्रुवीकरण करने वालों के काम में आसानी पैदा की है। ऐसा लगता है कि मुसलमानों में गहरे चिंतन मनन के आधार पर मत बनाने का घोर अभाव है। यह मुस्लिम बुद्धिजीवियों की ज़िम्मेदारी है कि वे मुसलमानों में हालात का विश्लेशण करने की सलाहियत पैदा करे और उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की प्रासंगिकता का बोध कराएं। ■■

सामराज का अंत

सामराज को भागना ही होता है एक दिन
आधी रात को, जब चमेंली महकती है
पूरे चांद की दूधिया चादर तले और प्रेमी
गाते हैं विरह के गीत
या सवेरे ठंडी हवाओं के आगमन के साथ
सामराज मुंह छिपाए सरपट भागता है जिधर बन पड़े।

सामराज जब भागता है तो भागते हैं
उसके हरकारे अपनी आत्मा की आवाज़ से डर कर
जिसे उन्होंने क़ैद कर दिया था नरक की अथाह गहराइयों में
वह चीखती है;
'फ़ना की कोई दुआ आज मक़बूल नहीं हैं'
सामराज जब भागता है तो भूल जाता है सिविलाइज़ेशन मिशन

सामराज दरअस्ल डरपोक बंदर है जो भपकता है हर अजनबी पर
और 'तमाम बमों की मां' पर सवार उसकी सभ्यता की देवी
अस्ल में एक बदचलन औरत है
जो नचाती है पूरे शहर को अपनी उंगली पर
और सुबह डर जाती है देखकर अपनी ही शक्ल

आदमी का जीवन है चार दिन
लेकिन सामराज जीता है बस एक रोज़
सामराज की नियति उसका अंत है,
आज,
कल, या कल के बाद का आज।

—**उसामा हमीद,** शोधार्थी एएमयू



विशेष

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह.)

ज्ञान, धर्म और प्रकृति का सामंजस्य

हमें किसी धर्म व धार्मिक किताब की जानकारी नहीं जिसने क़ुरआन की तरह बुद्धि से काम लेने, उससे लाभ उठाने, चिन्तन व अनुभव से निष्कर्ष निकालने, कारण और प्रभाव का संबंध ज्ञात करने और सृष्टि से सीख प्राप्त करने का आह्वान किया हो। और प्रकृति पर चिंतन की मानव क्षमता से काम न लेने, प्रकृति से विमुख होने, राष्ट्रों व जातियों के जीवन में घटित घटनाओं से सीख न लेने और व्यक्ति, समुदाय तथा प्रशासनिक स्तर के क्रिया-कलाप से उत्पन्न नतीजों से आंखें बंद करने पर क़ुरआन की तरह पकड़ की हो।

क़ुरआन ने ज्ञानेंद्रियों (जिनमें आंख का बड़ा महत्व है) से काम लेने और ठीक से देखने पर बहुत बल दिया है ताकि मानव चक्षु से ज्ञानचक्षु तक पहुंच सके। क़ुरआन में है कि-

अनुवाद : "क्या उन्होंने इस पर नज़र नहीं की कि हम सूखी धरती की तरफ़ पानी पहुंचाते रहते हैं फिर उसके ज़रिए से खेती पैदा कर देते हैं जिससे उनके जानवर खाते हैं और वह स्वयं भी, तो क्या यह लोग देखते नहीं।"

(सुरह सजदा : 27)

और इस महान वरदान (नेत्र ज्योति) से काम न लेने पर फटकार की है-

अनुवाद : "सो अंधे और बहरे हो गए, फिर अल्लाह ने इन पर दया दृष्टि की फिर भी उनमें के बहुत से अन्धे और बहरे ही रहे और अल्लाह ख़ूब देख रहा है उनके करतूत।" (सुरह माइदा : 71)

अनुवाद : आप कह दीजिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?

(सुरह अनआम : 50)

अनुवाद : "दोनों फ़रीक़ों की हालत ऐसी है जैसे एक अंधा व बहरा हो और एक देखने वाला और सुनने वाला हो। क्या यह दोनों हालत में बराबर हैं, तो क्या तुम समझते नहीं? (सुरह हूद : 24)

अनुवाद : "आप कहिए कि क्या अंधा और आंखों वाला बराबर हो सकता है या यह कि कहीं अंधेरा और उजाला बराबर हुआ है?"

(सुरह रअद : 16)

अनुवाद : और न अंधा और न आंखों वाला कहीं बराबर है और न अंधेरे और उजाले ही।"

(सुरह फ़ातिर : 19-20)

अल्लाह की आयतों की अनदेखी करने पर चेतावनी देते हुए फ़रमाया गया-

अनुवाद : "और कितनी ही निशानियां आसमानों और ज़मीनों में हैं कि उनपर से यह लोग गुज़रते हैं और उनकी तरफ़ से मुंह फेरे रहते हैं।"

(सूरह यूसुफ़ :105)

और आंखों वालों को ग़ैरत दिलाते हुए फ़रमाया-

अनुवाद : "तो ऐ आंख वालो! इबरत (सीख) हासिल करो।"

(सूरह हश्र : 2)

अक़्ल से काम लेने और समझदारों को ग़ैरत दिलाने के लिए "ताकिलून" का शब्द क़ुरआन में बार-बार प्रयोग में आया है । यहां तक कि ऐसी आयतों की संख्या तेईस तक पहुंचती है जिनमें

"केवल नेचुरल साइंसेज ही यूरोप में ज़िंदगी पैदा करने के ज़िम्मेंदार नहीं हैं, बल्कि इस्लामी सभ्यता ने यूरोप के जीवन पर नाना प्रकार के महान प्रभाव डाले हैं और इसका शुभारंभ उसी समय से हो जाता है जब इस्लामी सभ्यता व संस्कृति की पहली किरण यूरोप पर पड़नी शुरु हुई।"

"लअल्लूकूम ताक़ेलून" अफ़ला ताक़ेलून" और इनकून्तुम ताकेलून" के शब्द प्रयोग में आए हैं, उदाहरण के लिए यहां कुछ आयतों के अनुवाद लिखे जा रहे हैं-

अनुवाद:"अल्लाहइसीतरहतुम्हारे लिए खोल कर अपने अहकाम (आदेश) बयान करता है शायद कि तुम समझो।"

(सूरह बक्र : 242)

अनुवाद : "हम तो तुम्हारे लिए निशानियां खोलकर ज़ाहिर कर चुके हैं।" (सूरह आले इमरान : 118)

अनुवाद : "और आख़िरत (परलोक) ही का घर उन लोगों के हक़ में बेहतर हैं जो डरते हुए जीवन-यापन करते हैं, सो क्या वो अक़्ल से काम ही नहीं लेते!" (सूरह आराफ़ : 169)

अनुवाद : "निस्संदेह हम तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब उतार चुके हैं जिसमें तुम्हारे लिए नसीहत (उपदेश) मौजूद है, तुम क्या फिर भी नहीं समझते?"

(सूरह अंबिया : 10)

अनुवाद : "और तुम इन पर सुबह व शाम गुज़ारा करते हो तो क्या फिर भी अक़्ल से काम नहीं लेते?"

(सूरह : साफ़्फ़ात : 137-138

नरकवासियों के अक़्ल से काम न लेने का उल्लेख करते हुए फ़रमाया-

अनुवाद : "और वह यह भी कहेंगे कि हम अगर सुन लेते या अक़्ल से काम लेते तो हम नरकवासियों में से न होते।"

(सूरह मुल्क : 10)

इसी प्रकार शब्द "याक़ेलून" प्रशंसा के संदर्भ में 20 से अधिक बार आया है और क़रआन का यही मामला चिंतन का बुलावा देने और चिंतनशील व्यक्तियों की प्रशंसा और चिंतन से काम न लेने वालों की निंदा के सिलसिले में हैं। क़ुरआन में "यतफ़क्करून" का शब्द 11 बार आया है जैसे फ़रमाया गया-

अनुवाद : "यह ऐसे हैं कि जो अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर (बराबर) याद करते रहते हैं और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं।"

(सूरह आले इमरान : 191)

अनुवाद : "सो आप बयान कीजिए यह हालात शायद कि लोग सोचें।"

(सूरह आराफ़ : 176)

अनुवाद : "बेशक इन सब में उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं दलीलें मौजूद हैं।" (सूरह रअ़द : 3)

इसी चिंता के फलस्वरूप ऋषि-मुनि सत्य की खोज कर सके जिसके बारे में क़ुरआन ने उनकी ज़बान से कहा है-

अनुवाद : "ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह (सब) निरर्थक नहीं पैदा किया।"

(सूरह आले इमरान : 191)

चिंतन की पुकार का प्रतिफल : चिंतन और ग़ौर करने के इस आह्वान के नतीजे में सोचने-विचारने की एक ऐसी धारा बही जिसने ज्ञान-विज्ञान और मानव सभ्यता को प्रभावित किया और इसका प्रभाव सारी दुनिया पर पड़ा। मानो एक झरोखा खुल गया जिससे रोशनी और ताज़ा हवा आने लगी। इस प्रकार इस्लाम ने जैसे उस ताले को खोल दिया जिसे आज़ादी और चिंतन के दुश्मनों तथा प्राचीन धर्मों के ग़लत प्रतिनिधियों ने मानव की सूझबूझ पर डाल रखा था। और दुनिया उस गहरी नींद से जाग उठी जो उस पर हज़ारों साल से छाई थी। उसने आंखें मींज कर अपने खोए हुए विकास की पुनः प्राप्ति और मार्ग की कठिनाइयों से निपटने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ना शुरू किया। इस संबंध में एक फ्रांसीसी विद्वान जालीवेट कैस्टेलाट (jolivet castelot) ने अपनी पुस्तक "ला लुई डीला हिस्टोरे" (La-loi de l' histoire) में लिखता है-

"मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद अरबों ने बड़ी तेज़ी से तरक़्क़ी की, इस्लाम के प्रचार के लिए समय भी बहुत अनुकूल था, इसी के साथ इस्लामी सभ्यता ने भी आश्चर्यजनक उन्नति की और विजयश्री के झुरमुट में उसका हर जगह विकास होने लगा। ज्ञान और कला कौशल तथा साहित्य पर उसके प्रभाव प्रकट होने लगे। और इस प्रकार अरब कुछ शताब्दियों तक अपने हाथों में ज्ञान ज्योति उठाए रहे और उन तमाम ज्ञानशास्त्रों का प्रतिनिधित्व किया जिनका संबंध दर्शनशास्त्र, खगोल विद्या, रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र से था। इस प्रकार वह केवल कहने मात्र को चिंतन व खोज का नेतृत्व नहीं कर रहे थे, बल्कि अपने ज्ञान की गरिमा के फलस्वरूप वे इसके सर्वथा अधिकारी थे। अरब संस्कृति की आस्था कम थी किंतु इसके प्रभाव दूरगामी थे, और हम इसके पतन पर अफ़सोस ही कर सकते हैं।"

"मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद अरबों ने बड़ी तेज़ी से तरक़्क़ी की, इस्लाम के प्रचार के लिए समय भी बहुत अनुकूल था, इसी के साथ इस्लामी सभ्यता ने भी आश्चर्यजनक उन्नति की और विजयश्री के झुरमुट में उसका हर जगह विकास होने लगा। ज्ञान और कला कौशल तथा साहित्य पर उसके प्रभाव प्रकट होने लगे। और इस प्रकार अरब कुछ शताब्दियों तक अपने हाथों में ज्ञान ज्योति उठाए रहे और उन तमाम ज्ञानशास्त्रों का प्रतिनिधित्व किया जिनका संबंध दर्शनशास्त्र, खगोल विद्या, रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र से था।

आगे चलकर वह लिखता है-

"यद्यपि शासक सामंतशाही प्रकृति रखते थे हालांकि उनके ज़रिये जो काम हुआ वे उनके व्यक्तित्व से कहीं ऊंचा था। इसी के फलस्वरूप एक नई सभ्यता ने जन्म लिया। यूरोप अरब संस्कृति के प्रति आभारी हैं जब वे 10वीं से 14वीं शताब्दी तक छाई थी और शासन करती थी, यूरोप ने इससे दर्शनशास्त्र और ज्ञान के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्राप्त किया जिसने मध्ययुग में ख़ामोश प्रभाव डाला। हमें वह अरब संस्कृति , अरब ज्ञान व कौशल और अरबी साहित्य के आगे जाहिल व गंवार नज़र आता है । वह उस स्वच्छ वातावरण से लाभान्वित हुआ जो उस ज़माने में अरब चिंतन की देन थी। इन चार शताब्दियों में अरब कल्चर के अतिरिक्त कोई कल्चर नहीं था। और इसकी पताका अरब विद्वानों के हाथ में थी ।"

गेस्टव ले बान (Gustave le Bon) ने लिखा है कि-

"लोग, प्रयोग व अध्ययन तथा आगमनात्मक तर्क (Inductive logic) को जो आधुनिक ज्ञान की अस्ल की हैसियत रखते हैं, फ्रैंसिस बैकन (Francis Bacon) की देन बताते हैं किंतु अब यह स्वीकार किया जाना ज़रूरी है कि यह प्रणाली पूर्णतया अरबों की ईजाद है।"

रॉबर्ट ब्रिफाल्ट (Robert Brifault) अपनी पुस्तक (The making of humanity) में लिखते हैं-

"यूरोप के विकास का कोई ऐसा पहलू नहीं जिस पर इस्लामी सभ्यता का एहसान और उसके स्पष्ट प्रभाव की गहरी छाप न हो।"

वह यह भी कहता है-

"केवल नेचुरल साइंसेज ही यूरोप में ज़िंदगी पैदा करने के ज़िम्मेदार नहीं हैं, बल्कि इस्लामी सभ्यता ने यूरोप के जीवन पर नाना प्रकार के महान प्रभाव डाले हैं और इसका शुभारंभ उसी समय से हो जाता है जब इस्लामी सभ्यता व संस्कृति की पहली किरण यूरोप पर पड़नी शुरू हुई।"

■■

जन-गण-मन



मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

जनसमस्याओं से दूरी कमज़ोर विपक्ष की निशानी

जब भी रसोई गैस के दाम बढ़ते हैं, सोशल मीडिया पर स्मृति ईरानी की एक फ़ोटो पोस्ट कर लोग पूछते हैं कि कांग्रेस शासन में महंगी होती गैस का विरोध करने वाली यह महिला अब कहां है? हालांकि यह सवाल आज के विपक्षी दलों से होनी चाहिए। जब भाजपा विपक्ष में थी तब स्मृति ईरानी ने सड़कों पर उतर कर महंगाई का विरोध किया था। आज यह ज़िम्मेदारी मौजूदा विपक्षी दलों की है। ऐसा नहीं है कि मोदी सरकार में विपक्ष के पास मुद्दों का अभाव है, इसके बाद भी अगर विपक्ष अपनी ज़मीन खो रहा है, तो उसको अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। कुछ दिनों पहले देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस ने अन्य विपक्षी दलों को यह कहकर एक मंच पर लाने की कोशिश की कि अगर एकजुट नहीं हुए तो अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जाएगा, लेकिन उनकी इस चिंता में जनता के मुद्दों के लिए कोई जगह नहीं थी। यह चिंता सिर्फ़ कुर्सी हासिल करने तक सीमित है।



2014 के बाद से एक नए विपक्ष का उदय हुआ है जो जनता के बीच कम और सोशल मीडिया पर ज़्यादा सक्रिय है। इस सक्रियता का आलम यह है कि कांग्रेस के सोशल मीडिया अकाउंट से करनाल में किसानों का सिर फोड़े जाने



की ग़लत फ़ोटो पोस्ट कर दी जाती है। मोदी सरकार में जनता के सामने समस्याओं का अंबार है। लोगों का दैनिक जीवन कठिन होता जा रहा है। रसोई गैस, डीजल, पेट्रोल, सरसों तेल आदि आवश्यक वस्तुओं के दाम दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रहे हैं। महंगाई पूरी तरह लूट में तब्दील हो चुकी है। लोगों के पास रोज़ी-रोज़गार का अभाव है। जिनके पास रोज़गार थे वह छिन गए। भ्रष्टाचार संस्थागत रूप ले चुका है। स्विज़ बैंको में भारतीयों का काला धन लगातार बढ़ रहा है। नोटबंदी, लॉकडाउन से लाखों लोग प्रभावित हुए।

कोरोना काल में सरकारी लापरवाही के कारण हज़ारों लोगों की मौत हो गई। कई हज़ार कंगाली के उस दहाने तक पहुंच गए कि उनके पास लाशों का अंतिम संस्कार करने के लिए पैसे तक नहीं थे। वे अपने प्रिय परिजनों की लाशों को नदियों में बहाने या उसके किनारे गाड़ देने के लिए मजबूर हुए। किसान कई महीने से पूंजीवादी कृषि क़ानूनों के ख़िलाफ़ सड़कों पर आंदोलन कर रहे हैं। कभी उनको आगे बढ़ने से रोकने के लिए सड़कों पर कील ठोके जाते हैं, तो कभी उनके सिर फोड़ देने का हिटलरी फरमान जारी कर दिया जाता है । इनमें से किसी ऐसे मुद्दे के बारे में नहीं कहा जा सकता जब विपक्षी दलों ने सड़क पर उतर कर सरकार के ख़िलाफ़ ज़ोरदार विरोध किया हो?

किसान कई महीने से पूंजीवादी कृषि क़ानूनों के ख़िलाफ़ सड़कों पर आंदोलन कर रहे हैं। कभी उनको आगे बढ़ने से रोकने के लिए सड़कों पर कील ठोके जाते हैं, तो कभी उनके सिर फोड़ देने का हिटलरी फरमान जारी कर दिया जाता है । इनमें से किसी ऐसे मुद्दे के बारे में नहीं कहा जा सकता जब विपक्षी दलों ने सड़क पर उतर कर सरकार के ख़िलाफ़ ज़ोरदार विरोध किया हो?

देश का एक हिस्सा पुलिस स्टेट या भगवा गुंडा राज में तब्दील हो चुका है। दिल्ली दंगे में पीड़ितों पर पुलिस ने कार्रवाई की। दंगाई तत्वों को बचाने की कोशिश की गई। पाकिस्तान या अफ़गानिस्तान समर्थक होने, गौ-रक्षा, मोब लिंचिंग आदि नाम पर सबसे बड़े धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय को भगवा चरमपंथियों द्वारा निशाना बनाया जा रहा है। पुलिस इनके साथ कंधे से कधा मिलाए खड़ी नज़र आती है। जिन राज्यों में ग़ैर-भाजपा सरकारें हैं, वहां भी अल्पसंख्यकों और जनता का विश्वास जीतने के लिए विपक्ष की ओर से कुछ नहीं किया जा रहा। न ही आदर्श सरकार का कोई उदाहरण पेश किया जा रहा है ताकि लोकसभा चुनाव में उसको भुनाया जा सके।

अर्थव्यवस्था, किसानों की बदहाली, राफेल विमान सौदा घोटाला, संवैधानिक संस्थाओं का अतिक्रमण, चीनी घुसपैठ आदि मुद्दों पर विपक्ष जनता को सच्चाई बताने और उसको भरोसे में लेने में पूरी तरह असफल रहा है। जनता के समर्थन में सड़कों पर उतरने या सरकार को घेरने से कहीं ज़्यादा विपक्षी नेता गोदी मीडिया पर चलने वाले फालतू के और मुद्दाविहीन बहस का हिस्सा बनते नज़र आते हैं। यह जानते हुए भी कि इन चैनलों का काम सरकार से सवाल करने की जगह बनावटी मुद्दों में जनता को उलझा कर सरकार की नाकामी से उनका ध्यान हटाना है।

सच तो यह है कि अब मीडिया, सोशल मीडिया या अन्य मंचों से विपक्ष जो भी मुद्दे उठाता है उसका मक़सद सिर्फ़ अपनी मौजूदगी दर्ज करना होता है। सरकार को घेरना, उसको पीछे हटने पर मजबूर करना, भाजपा को हराना या सत्ता में वापसी करना उनका मक़सद है ही नहीं। यही कारण है कि लाख जनसमस्याओं के बावजूद विपक्षी दलों की पकड़ जनता के बीच नहीं है। न ही विपक्षी दल जनसमस्याओं को अपने लिए अवसर के रूप में भुनाना चाहते हैं। वे जनसमस्याओं पर वोट की राजनीति

अर्थव्यवस्था, किसानों की बदहाली, राफेल विमान सौदा घोटाला, संवैधानिक संस्थाओं का अतिक्रमण, चीनी घुसपैठ आदि मुद्दों पर विपक्ष जनता को सच्चाई बताने और उसको भरोसे में लेने में पूरी तरह असफल रहा है।

भी करते नज़र नहीं आते। चुनाव में हारने के बाद आत्ममंथन करने, ख़ामियों को दुरुस्त करने की जगह विपक्षी दलों का बहाना होता है कि हिन्दुत्व की लहर और धार्मिक ध्रुवीकरण के चलते चुनाव हार गए। कुछ ठीकरा वे ईवीएम पर फोड़ देते हैं, लेकिन अपनी रणनीति और संकल्प की विफलता पर कभी बात नहीं करते।

सरकार पर जो भी दबाव बना सीएए-एनआरसी विरोधी आंदोलन, किसान आंदोलन और रविश कुमार जैसे पत्रकारों और विश्लेषकों के कारण बना। विपक्षी दलों का हाल यह रहा कि वे कभी सीएए-एनआरसी विरोधी आंदोलनों और कभी किसान आंदोलन के मंच का इस्तेमाल अपनी बात रखने के लिए कर लेते हैं, लेकिन उन्होंने समस्याओं के अंबार पर सरकार के ख़िलाफ़ अपना कोई मंच नहीं खड़ा किया। आम जनता की हालत यह है कि सरकार उनको उद्योगपतियों के लिए दुधारू गाय बनाए हुए है और विपक्षी दल उनकी दशा पर मौन है। न तो सरकार को उनकी समस्याओं से कोई सरोकार है न विपक्ष को।

विपक्ष आज सिर्फ़ संसद में संख्या बल ही नहीं रणनीतिक रूप से भी कमज़ोर है। वह दौर और था जब 1974 में जयप्रकाश नारायण ने रामधारी सिंह दिनकर की कविता से नारा दिया कि 'सिंहासन ख़ाली करो कि जनता आती है' तो दिल्ली की इंदिरा सरकार हिल गई। उस समय कांग्रेस उतनी ही शक्तिशाली थी, जितनी आज मोदी सरकार है, लेकिन जयप्रकाश नारायण के 'सशक्त विपक्ष' को रोकने के लिए सरकार को आपातकाल लगाना पड़ा।

आज जो विपक्ष जनता के सामने है उसके पास न तो सरकार की जनविरोधी नीतियों के ख़िलाफ़ व्यापक संघर्ष की कोई योजना है, न ही अपने कार्यकर्ताओं में वैचारिक तथा राजनीतिक जोश भरने का संकल्प। अब न तो विपक्षी नेता जनता के लिए सड़कों पर उतरते हैं, न पुलिस की लाठी खाते हैं, न जेल जाते हैं। जनसमस्याओं के लिए संघर्ष करके जेल जाने वाले नेताओं से कहीं ज़्यादा संख्या उन नेताओं की है जो आपराधिक वारदात के कारण जेल जा चुके हैं।

लोकतंत्र में विपक्ष जनता की सशक्त आवाज़ होती है और वह दबाव तथा आंदोलनों के ज़रिये सरकार को निरंकुश होने से रोकती है। आज मोदी सरकार पर अगर निरंकुश होने के आरोप लग रहे हैं तो उसकी ज़िम्मेंदारी विपक्षी दलों और उनके नेताओं पर भी आती है। विपक्ष अपनी भूमिका को सार्थक करता, तो सरकार के बहुत से जनविरोधी फ़ैसले कूड़ेदान की शोभा बन रहे होते। ■■

Alhelal Hospital Pvt Ltd
الهلال ہاسپیٹل

Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj, Darbhanga

Alhelal Hospital Pvt Ltd in Darbhanga. Hospitals with Address, Contact Number, Photos, Maps.
View Alhelal Hospital Pvt Ltd, Darbhanga on Justdial.
Whereabouts and Overview:
Among the finest Hospitals in the city, Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj,
Darbhanga is known for offering excellent patient care.
The clinic is located centrally in Rahamganj,
a prominent locality in the city. It stands close to Near Bibi Pakar which not only makes it convenient for people from the vicinity to consult the doctor but also for those from other neighbourhoods to seek medical guidance.

There is no dearth of public modes of transport to reach the clinic from all major areas of the city.

Whereabouts and Overview:

Among the finest Hospitals in the city,
Alhelal Hospital Pvt Ltd in Rahamganj,
Darbhanga is known for offering excellent patient care.
The clinic is located centrally in Rahamganj,
a prominent locality in the city.
It stands close to Near Bibi Pakar which not only
makes it convenient for people from the vicinity to consult
the doctor but also for those from other neighbourhoods
to seek medical guidance.
There is no dearth of public modes of transport to reach
the clinic from all major areas of the city.





Address : Bibi Pakar, Karamganj, Darbhanga,
Bihar, India, 846003
Phone No. :9308547048
Email :alhelalhospital.dbg@gmal.com
Official website : http://www.alhelalhospital.com/



अर्थतंत्र पर
क्रॉनी कैपिटलिज़्म की पकड़

ज्वलंत



जुनैद अली
मध्य प्रदेश

वित्त वर्ष 2021-22 के जीडीपी के प्रथम तिमाही के नतीजें में 20.1 प्रतिशत की तेज़ उछाल दर्ज हुई जो अपने आप में एक कीर्तिमान है और स्पष्ट रूप से अर्थव्यवस्था में रिकवरी के संकेत हैं। चालू वित्त वर्ष के दौरान प्रथम तिमाही में भले ही उत्साहित करने वाले आंकड़े मिले हैं लेकिन इस आधार पर ऐसा मान लेना कि अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटते हुए सरपट दौड़ने के लिए तैयार हो चुकी है तो यह तथ्यों के साथ न्याय नहीं होगा। सरकार द्वारा ज़ारी किए गए जीडीपी के आंकड़े में इस बात का खुलासा किया गया है कि इस वर्ष अप्रैल से जून तक देश की जीडीपी 32.38 लाख करोड़ की रही जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 26.95 लाख करोड़ की रही थी इस लिहाज़ से बीस प्रतिशत का इज़ाफा ज़रूर देखने को मिलता है लेकिन यदि अर्थव्यवस्था की मौजूदा रफ़्तार का मिलान वित्त वर्ष 2019 के समान अवधि से किया जाए तो चमक फीकी पड़ती दिखती है क्योंकि वर्ष 2019 में अप्रैल से जून तक देश की जीडीपी का आकार 35.85 लाख करोड़ का रहा था, यानी अभी भी देश की अर्थव्यवस्था दो वर्ष पहले वाली स्थिति तक अपनी पहुंच बनाने में सफल नहीं हो सकी है।

अर्थव्यवस्था में आई उछाल आम जनता को कितना राहत पहुंचाएगी और उनके लिए कितना खुशहाली का सबब बनेगी इस पर ढेरों सवाल है लेकिन केन्द्र सरकार ने इस अवसर को भुनाने में देर नहीं लगाई और वित्त मंत्री निर्मला

सीतारमण ने 23 अगस्त को नेशनल मॉनेटाइज़ेशन पाइपलाइन नामक योजना का ऐलान कर दिया। हालांकि वित्त मंत्री ने इस योजना के बारे में 2021-22 के बजट में भी विस्तृत रूप से ज़िक्र किया था। संपत्ति मुद्रीकरण का आशय यही है कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों और संपत्तियों को निजी कंपनियों को पट्टे पर देकर अपने लिए धन उगाही करना चाहतीं हैं। इस योजना के तहत बीस सेक्टरों में क़रार के ज़रिये सरकार अपनी संपत्तियों को 25 वर्षों के लिए निजी हाथों में सौंपना चाहती है। इस क़वायद में विशेष रूप से रेलवे, सड़क, शिपिंग, विमानन, बिजली, दूरसंचार, तेल और गैस, स्टेडियम और गोदाम जैसे क्षेत्र में सरकारी संपत्तियों को सीमित अवधि के लिए पट्टे पर निजी कंपनियों को दिया जाएगा।

केन्द्र सरकार की इस योजना का निजी कंपनियों ने स्वागत किया है लेकिन सरकार चार वर्षों में निर्धारित लक्ष्यों को शत-प्रतिशत हासिल कर पाए इस पर भारी संशय है क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में केन्द्र सरकार ने निजीकरण और विनिवेश का बड़ा प्रयास किया लेकिन कोई बड़ी सफलता दर्ज करने में असफल रहीं है। केन्द्र सरकार ने वित्त वर्ष 2020-21 विनिवेश का लक्ष्य 2.1 लाख करोड़ रखा था लेकिन बमुश्किल 21300 करोड़ का ही विनिवेश हो सका यानी निर्धारित लक्ष्य का मात्र 10% प्रतिशत ही विनिवेश का बंदोबस्त कर सकी। केन्द्र सरकार पिछले कई वर्षों से एयर इंडिया का निजीकरण करने का प्रयास कर रहीं हैं लेकिन कर्ज़ों और घाटे से जूझ रही एयर इंडिया को खरीदने के लिए किसी भी खरीदार ने हिम्मत नहीं दिखाई है। रेलवे ने भी कुछ ट्रेनों के परिचालन को निजी हाथों में देने का प्रयास किया लेकिन पूंजीपतियों ने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई।

सरकार ने इस बात को ज़ोर-शोर से प्रचारित करने का प्रयास किया है कि संपत्तियों की बिक्री नहीं की गई है और एसेट मॉनेटाइज़ेशन के बावजूद संपत्तियों पर सरकारी नियंत्रण क़ायम रहेगा लेकिन अभी तक राष्ट्रीय मौद्रिक नीति के तहत संपत्तियों को निजी खिलाड़ियों को पट्टे पर देने की शर्तों के बारे में बहुत ही अस्पष्टता है और लीज की अवधि के दौरान संपत्तियों पर सरकारी दख़ल का स्वरूप क्या होगा? यह अपने आप में बड़ा सवाल है। सरकार अपने आंकलन के आधार पर संपत्तियों के मुद्रीकरण ज़रिये चार वर्षों के भीतर छह लाख करोड़ जुटाने की मंशा जताई है लेकिन



इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि सरकार द्वारा निर्धारित रकम पर पूंजीपति हामी भर दें या उसे सीधे तौर पर स्वीकार करते हुए क़रार की रकम का एकमुश्त भुगतान कर दें।

देश की कुछ गिनी-चुनी कंपनियां के पास ही पर्याप्त पूंजी है जिसके बलबूते वे सरकारी संस्थानों को पच्चीस से चालीस वर्षों के लिए पट्टे पर ले सकतीं हैं और यदि सरकार प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के आधार पर मझोले या छोटी कंपनियों को राशि भुगतान के लिए किश्तों का विकल्प देती है तो क़रार पर तय की गई राशि के भुगतान को लेकर स्थिति जटिल हो सकतीं हैं या भुगतान संबंधित मामलों में अनिश्चितता देखने को मिल सकतीं हैं जैसा कि टेलीकॉम सेक्टर की कई कंपनियों द्वारा एजीआर की रकम जो कि एक तरह की उपभोग और लाइसेंसिग शुल्क है उसे दूरसंचार विभाग को सौंपने में आनाकानी करते हुए सरकार से राहत की मांग की थी।

आर्थिक मामलों में सरकार की निर्भरता जिस तेज़ी के साथ पूंजीपतियों पर बढ़ रही है उसे लेकर कुछ आर्थिक विशेषज्ञों का यह भी मत है कि देश के अर्थतंत्र में क्रोनी कैपिटलिज़्म की पकड़ मज़बूत होगी या पूरा आर्थिक सिस्टम चंद कंपनियों के एकाधिकार में जा सकता है। यूपीए की सरकार के दौरान एनडीए ख़ेमें ने निजीकरण और विदेशी निवेश का भारी विरोध करते हुए इसे आर्थिक गुलामी क़रार दिया था लेकिन मौजूदा सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल के दौरान अपने एक नारे "न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन" को उछाला दिया,जिसे आर्थिक जानकारों ने इस रूप में परिभाषित किया था कि उदारीकरण की नीतियों पर आधारित अर्थव्यवस्था में सरकार का



काम सार्वजनिक कंपनियों को स्थापित करना या उसे नियंत्रित करना नहीं है बल्कि सरकार का काम क़ानून व्यवस्था को लागू करना है, निजी कंपनियों की मनमानियों पर नकेल कसना, बाज़ार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और प्रशासन के माध्यम से पूरी निष्पक्षता के आधार पर सभी मामलों को नियंत्रित करना है लेकिन जब देश की राजनैतिक दलों की धड़कनें पूंजीपतियों के द्वारा दिए गए चंदे से चल रही है तब निजीकरण और विनिवेश के मामलों में पारदर्शिता, न्यायिकता और निष्पक्षता का सवाल बहुत हद तक बेमानी हो जाता है।

इसमें कोई शक नहीं है कि निजीकरण के मामलों में एक भ्रम की स्थिति रही है कि इसके मार्फ़त सरकार का घाटा कम होगा और राजस्व में बढ़ोत्तरी दर्ज होगी क्योंकि अभी तक जितने भी सार्वजनिक संस्थानों का निजीकरण हुआ है या उसमें विनिवेश हुआ उसमें अधिकांश संस्थान फ़ायदे में चलने वाले रहे हैं या कम-से-कम वो अपने क्षेत्र में मजबूत पकड़ रखतीं थीं मसलन मारूति, हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड और बालकों का निजीकरण हुआ और आज़ यह सभी कंपनियां भरपूर लाभ दे रहीं हैं। यह स्पष्ट है कि निजी हाथ उन्हीं संस्थानों की ओर बढ़ेंगे जिनमें आंकलन के आधार पर शत-प्रतिशत लाभ निश्चित हो और उसे भी निजी कंपनियां औने-पौने कीमतों पर हथियाना के लिए साम-दाम-दंड-भेद वाली जुगत झोंकेंगे इसलिए सरकार को संपत्तियों के मुद्रीकरण के आधार पर वाजिब लाभ मिले? यह दूर की कौड़ी है।

समाजवाद पर आधारित व्यवस्था में सरकार की भूमिका व्यापक और महत्वपूर्ण होती है और जनता से जुड़े सभी पक्षों को व्यवहारिक दृष्टिकोण से एड्रेस करने की आवश्यकता होती है। सार्वजनिक कंपनियों को स्थापित करने के पीछे बड़ा मक़सद यही था कि सभी स्तरों पर जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति उचित कीमतों पर शहर से लेकर सुदूरवर्ती इलाकों में भी सहजता के साथ हो सकें इसलिए फ़ायदा बनाना सार्वजनिक कंपनियों का एक उद्देश्य है लेकिन सार्वजनिक कंपनियों की अहम जिम्मेंदारी यह है कि वस्तुओं की कीमतों को स्थिर रखने के साथ वस्तुओं तक सभी की पहुंच को सुनिश्चित करना रहा है लेकिन यह स्पष्ट है कि निजी कंपनियां सभी मामलों में समान रूप से रूचि नहीं दिखाएंगे बल्कि जहां आसानी से मोटा मुनाफा हासिल हो सकें उसी दिशा में दौड़ेंगे।

सरकारें भले ही सार्वजनिक

क्षेत्रों के घाटों को प्रचारित करें लेकिन वास्तविकता यही है कि पिछले दो दशकों में देश की सत्ता पर काबिज़ होने वाली सरकारों ने जहां बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट घरानों के कर्ज़ों को राइट ऑफ़ किया या कर्ज़ों की रिस्ट्रक्चरिंग के दौरान उन्हें गैर मामूली रियायत दी वहीं देश की कीमती संसाधनों को पूंजीपतियों के हाथों बहुत ही मामूली कीमतों पर लुटा दिया और सरकार कारपोरेट टेक्स घटाकर जबरदस्त तरीके से दरियादिली भी दिखा दी, जबकि पेट्रोलियम उत्पादों पर लगातार शुल्कों में वृद्धि कर मंहगाई की पूरी मार मध्यमवर्गीय और गरीबों पर डाल दी गई। आर्थिक मामलों से जुड़े कुछ जानकारों का ऐसा मानना भी है कि देश की सरकारों ने ही पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्रों की कंपनियों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमताओं का गला घोंट दिया, कुछ वर्षों पहले टेलीकॉम सेक्टर में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपन बीएसएनएल की तूती बोलती थी और सेवाएं हासिल करने के लिए लंबी कतारें थीं लेकिन आज़ यही कंपनी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहीं हैं।

सरकार भले ही संपत्तियों की मुद्रीकरण को लेकर इस बात का बखान ज़ोर-शोर से कर रहीं हैं कि निजी कंपनियों के मोर्चों पर डटने से बाज़ार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जिससे गुणवत्ता युक्त वस्तुएं जनता को आसानी से कम कीमतों में मिलेंगे और रोजगार की अपार संभावनाओं का सृजन होगा लेकिन वैश्विक हंगर इंडेक्स में भारत की स्थिति को देखें तो चमत्कारिक परिवर्तन की आस स्वत: गायब हो जाती है और बेरोज़गारी की लगातार ऊंची होती मीनारें पूरे उदारीकरण की नीतियों पर सवाल दागती हुई प्रतीत होती है। सीएमआई की रिपोर्ट के अनुसार बीते अगस्त के महीने में ही 15 लाख लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। जुलाई के महीने में राष्ट्रीय बेरोज़गारी दर 6.95 प्रतिशत था जो अगस्त के महीने में बढ़कर 8.32 प्रतिशत हो गई। निजी कंपनियां जिस तेज़ी से एआई और डिजिटल तकनीकी की ओर बढ़ रहीं हैं वो रोज़गार में बढ़ोत्तरी दर्ज करने नहीं देगा और निजी कंपनियों के पक्षों को मज़बूत बनाने के लिए सरकारों ने लेबर कानूनों में जिस तरीके से सौदेबाजी की है वो भविष्य के कर्मचारियों की स्थितियों को गर्त में धकेलता हुआ दिख रहा है। यह स्पष्ट है कि सामाजिक आयामों पर आर्थिक असंतोष तथा कलह और बेरोज़गारी की बेलगाम होती संख्याएं पूरी व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती साबित होगी।

सरकार भले ही संपत्तियों के मुद्रीकरण को लेकर इस बात का बखान ज़ोर-शोर से कर रही है कि निजी कंपनियों के मोर्चों पर डटने से बाज़ार में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जिससे गुणवत्ता युक्त वस्तुएं जनता को आसानी से कम कीमतों में मिलेंगे और रोजगार की अपार संभावनाओं का सृजन होगा।

उदारीकरण के तीन दशकों के प्रभावों का सामाजिक आधारों पर विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उदारीकरण की नीतियों ने सामाजिक आयामों पर अमीरी और गरीबी के बीच खाइयों को अप्रत्याशित रूप से चौड़ा किया है और त्रासदी यह है कि मौजूदा व्यवस्था में लगातार अमीर की धन-संपत्तियों में अंबार लग रहा है वहीं गरीब दो जून की रोटी और लंगोट के लिए भीषण संघर्ष कर रहा है। यह उदारीकरण की अव्यवहारिक नीतियों का ही प्रमाण है कि महामारी के दौरान जब पूरा देश भीषण संकटों से गुज़र रहा था और हर ग़रीब आर्थिक तथा अन्य पक्षों को लेकर एक मसीहा की तलाश में भागता दिख रहा था उस समय पर भी देश की कुछ चुनिंदा निजी कंपनियों की मिल्कियत में लगातार इज़ाफ़ा हो रहा था।

सार्वजनिक क्षेत्रों की संस्थानों और कंपनियों में देश के दबे-कुचले और शोषित वर्गों के लिए आरक्षण का प्रावधान है लेकिन निजी कंपनियों के लिए आरक्षण की बाध्यता नहीं है। जिस तेज़ी के साथ निजीकरण के दायरे में बढ़ोत्तरी हो रही है उस आधार पर आरक्षण के माध्यम से रोजगार हासिल करने वाले की संख्याओं में भी संकुचन देखने को मिलेगा जो सामाजिक आयामों पर गैरबराबरी को नये सिरे से परिभाषित कर सकता है। देश के अल्पसंख्यकों का बड़ा हिस्सा रोजगार के लिए असंगठित क्षेत्र से जुड़ा हुआ है लेकिन उनके विकास से संबंधित आर्थिक नीतियों में कोई ठोस प्रावधान और विकल्प ओझल हैं और अल्पसंख्यकों को जिस प्रकार से पक्षपात और उपयुक्त सुरक्षा के अभाव में जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है वो हुकूमत के रवैए पर गंभीर सवाल है।■■

"हिदायत और खुशख़बरी उन ईमान लाने वालों के लिए, जो नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं, और फिर वे ऐसे लोग हैं जो आख़िरत पर पूरा यक़ीन रखते हैं।"
(क़ुरआन, 27: 2-3)

A well Wisher
Azaan International School HYDRABAD

ऐ नबी, हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है। उनसे कहो, ''मेरे पास जो प्रकाशना आती है वह यह है कि तुम्हारा पुज्य प्रभु सिर्फ़ एक पुज्य है, फिर क्या तुम आज्ञाकारी होते हो?'' (कुरआन)

Girls Ideal Academy



अर्तरुल ग़ाज़ी
मनोरंजन का नया मॉडल

समीक्षा



राशिद अनवर

तुर्की का ड्रामा सीरियल अर्तरुल ग़ाज़ी ने भारतीय उपमहाद्विप विशेषकर भारत, पाकिस्तान एवं बंगलादेश में धूम मचा रखा है। यह ड्रामा पहली बार 2014 में आया जिसका मूल नाम द्वितीय अर्तरुल है जो टर्किश भाषा में था जिसे तुर्की के सरकारी टेलीविज़न चैनल टीआरटी ने पहली बार प्रसारित किया। सन् 2020 ई॰ में पीटीवी ने इसका उर्दू अनुवाद कर प्रसारित करना शुरू किया, जो यूट्यूब पर भी उपलब्ध है। इस सीरियल की लोकप्रियता का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि दर्शकों की संख्या करोड़ में मौजूद है। गांव-गांव में इसकी धूम मची है, बहुत से मुस्लिम युवाओं ने ड्रामा के किरदार अर्तरुल को अपना राल मॉडल मान लिया है। बूढ़े, बच्चे, युवा, लड़के एवं लड़कियां बेसबरी से अगले एपीसोड का इंतज़ार करते हैं।

कई विशेषज्ञों ने तो इसे ''गेम ऑफ़ थार्नस'' की संज्ञा तक दे डाली। वास्तव में इस ड्रामा सीरियल में उस्मानियां सल्तनत के उभरने की गौरव गाथा प्रस्तुत की गई है जिसकी अवधि लगभग 600 वर्ष है। ऑटोमन साम्राज्य जो कि 2.2 करोड़ वर्ग किलोमीटर पर फैला था, जिसका विस्तार मिस्र, ग्रीस, बुलगारिया, रोमानिया, मेसिडोनिया, हंगरी, फ़िलिस्तीन, जार्डन, लेबनान, सीरिया और अरब के अधिकतर हिस्से के अतिरिक्त अफ़्रीक़ा के तटीय इलाक़े शामिल थे। आइए जानने का प्रयास करते हैं कि इसकी कहानी क्या है? इसकी विशेषताएं और त्रुटियों को जानने की कोशिश करते हैं।

पांच सीजन पर आधारित इस ड्रामा सीरियल में 448 एपिसोड हैं एक एपिसोड लगभग 45 मिनट का है यदि एक साथ कोई व्यक्ति देखना चाहे तो भी 336 घंटे से कम न लगेंगे। पहले सीजन

में काई क़बीले एवं सलीबी (इसाईयों) के मध्य संघर्ष की कहानी, दूसरे सीज़न में मंगोल, दो दुगी एवं काई क़बीले, तीसरे सीजन में चावदार क़बीले, काई क़बीले एवं सल्जूक सल्तनत में मौजूद गद्दारों की कहानी, चौथे सीजन में सल्जूक सल्तनत के गद्दारों के साथ मंगोल और पांचवें में सल्जूक एवं मंगोल को दिखाया गया है। स्वयं सीरियल के शुरू में ड्रामा की विशेषता बताते हुए कहा गया है।

''अर्तरुल ग़ाज़ी 13वीं सदी के अनातोलिया तुर्की के इतिहास से ली गई एक महान दास्तान या लिजेंड है। ईमान, न्याय एवं प्रेम की रोशनाई से लिखी गई एक बहादुर योद्धा की कहानी जिसने अपनी साबित-क़दमी, जुर्रत से न सिर्फ़ काई क़बीले की बल्कि सम्पूर्ण इस्लामी जगत के भाग्य को बदल डाला। तुर्कों के घुमन्तू काई क़बीले को एक ऐसे वतन की तलाश थी जहां उसकी नस्लें परवान चढ़ सकें, काई क़बीले के सरदार सुलेमान शाह के बेटे अर्तरुल ग़ाज़ी ने इस्लाम की सरबुलन्दी की ख़ातिर अपनी जान व माल, सगे-सम्बंधियों को ख़तरे में डालकर अपने योद्धाओं के साथ विभिन्न वर्षों में सलीबियों, मंगोलों, सल्जूक सल्तनत में मौजूद गद्दारों और अन्य शत्रु शक्तियों को पराजित किया। 1280 ई॰ में अर्तरुल के देहांत के बाद उसके बेटे उस्मान ने सल्तनते उस्मानिया को स्थापित किया। यह ड्रामा सीरीज ऐतिहासिक किरदारों और घटनाओं से ली गई है।

इस सीरियल का पहला सीजन 76 एपिसोड पर आधारित है। कहानी की शुरुआत हलीमा सुलतान पर आक्रमण एवं अर्तरुल ग़ाज़ी द्वारा उसे बचाने से होती है। पहले सीजन में वास्तव में काई क़बीले एवं इसाईयों के मध्य संघर्ष को दिखाया गया है। काई क़बीले का सरदार सुलेमान शाह है, जो अर्तरुल के पिता हैं हायमा ख़ानम सुलेमान शाह की पत्नी हैं। काई क़बीले का मुख्य व्यवसाय कालीन बेचना एवं मवेशी पालना है।

इन 76 एपिसोड में काई क़बीले एवं सलीबियों के संघर्ष को दिखाया गया है। अन्ततः उस्ताज़े आज़म बने टाइटूस के सलीबी क़िले से भागने पर

अर्तरुल ग़ाज़ी 13वीं सदी के अनातोलिया तुर्की के इतिहास से ली गई एक महान दास्तान या लिजेंड हैं। ईमान, न्याय एवं प्रेम की रोशनाई से लिखी गई एक बहादुर योद्धा की कहानी जिसने अपनी साबित-क़दमी, जुर्रत से न सिर्फ़ कई क़बीले की बल्कि सम्पूर्ण इस्लामी जगत के भाग्य को बदल डाला।

अर्तरुल की फ़तह होती है। इस सीजन का समापन सुलेमान शाह की मौत एवं हलीमा सुलतान तथा अर्तरुल के विवाह के बाद हो जाता है।

दूसरा सीजन जिसमें 104 एपिसोड हैं, में काई क़बीले एवं मंगोल के मध्य संघर्ष को दर्शाया गया है। इस सीजन की शुरुआत काई क़बीले पर अचानक मंगोल आक्रमण से होता है, जिसका कमांडर नोयान है, बाध्य होकर काई क़बीले को दो दुगी क़बीले में शरण लेना पड़ता है। दो दुगी क़बीले का सरदार हायमा ख़ानम के भाई हैं, दोनों क़बीले के संयुक्त तत्वाधान में मंगोलों से संघर्ष जारी रहता है। इस मंगोल संघर्ष में अर्तरुल का ममेरा भाई मारा जाता है अन्ततः अत्यंत ज़ख़्मी हालत में नोयान को मरता समझकर अर्तरुल अपने ज़ख़्मी सैनिक बाम्सी को वापस काई क़बीले लेकर आता है।

तीसरे सीजन की शुरुआत पुनः काई क़बीले के प्रयास से ही होती है जहां चावदार क़बीले से सामना होता है इस सीजन के मुख्य किरदार सआदतीन कोपेक, उराल, बहाइर, सुलतान अलाउद्दीन आदि हैं। हानल बाज़ार जो एक व्यापारिक केन्द्र है का मालिक सिमोन सलीबी है इस पर अर्तरुल का क़ब्ज़ा हो जाता है जो कि आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र एवं आय का एक बड़ा स्रोत होता है। साथ ही काराजयसार के क़िले में सलीबियों के सहयोग से ज़मींदार का अर्तरुल से संघर्ष जारी रहता है। सल्जूक रियासत के इस क्षेत्र के अमीर सआदतीन कोपेक वास्तव में गद्दार है और सुलतान अलाउद्दीन के समानान्तर अपनी हुकूमत चलाना चाहता है।

चौथे सीजन में सुलतान अलाउद्दीन का आगमन होता है अर्तरुल एवं उसके साथियों द्वारा काराजयसार के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जाता है, जबकि ज़मीनदार एरिस एवं दीदान भागने में कामयाब हो जाता है। इस समय तक असलहान ख़ातून का विवाह अर्तरुल के सिपहसालार तुर्गूत से हो जाता है एवं कुछ दिनों बाद वह चावदार क़बीले का सरदार बन जाता है। इस बीच बामसी

को काई क़बीले का नया कमांडर बनाया जाता है। अमीर सआदतीन कोपेक सुलतान अलाउद्दीन को ज़हर दिलवाकर मार देता है साथ ही उसके छोटे बेटे शहज़ादा क्रिच अरसलान की भी हत्या कर दी जाती है एवं सल्जूक रियासत का नया सुलतान शहज़ादा ग़यासुद्दीन बन जाता है। सुलतान की ओर से अमीर सआदतीन कोपेक की मौत के गुप्त फ़रमान जारी होने के बाद अर्तरुल उसे अंजाम तक पहुंचा देता है। इसी सीजन में पुनः मंगोल कमांडर नेयान का आगमन होता है और अर्तरुल का मंगोल से संघर्ष जारी रहता है। इस सीजन में अर्तरुल के तीसरे बेटे उस्मान की पैदाइश होती है, हलीमा सुलतान का देहांत हो जाता है। सोत की ओर प्रवास के साथ ही इस सीजन का समापन होता है।

पांचवें सीजन में भी काई क़बीले को दिखाया गया है। इसकी शुरुआत 10 वर्ष बाद होती है जब अर्तरुल के बेटे को अलबेल्जा ख़ातून ज़ख़्मी हालत में काई क़बीले लाती है बाद में अलबेलजा ख़ातून से अर्तरुल की शादी हो जाती है सल्जूक सल्तनत केवल नाम का रह जाता है यहां मंगोल कठपुतली बैठा दिया जाता है। इस सीजन में ड्रेगोर अर्तरुल का बड़ा दुश्मन होता है। इसी सीजन में अर्तरुल के बेटे गुनदूज और उस्मान युद्ध में भाग लेते हैं। इस सीजन की समाप्ति के पश्चात अर्तरुल नए अभियान की ओर निकल जाता है और ड्रामे का समापन हो जाता है।

सीरियल के निर्माता टीम का दावा है कि इसमें सच्चाई एवं इतिहास को दर्शाया गया है। इसमें इस्लामी संस्कृति, नैतिकता, मानवीय मूल्य को दर्शाया गया है, जबकि अश्लीलता, फूहड़ता से दूर किन्तु आकर्षक, सुन्दर, प्राकृतिक

सीरियल के निर्माता टीम का दावा है कि इसमें सच्चाई एवं इतिहास को दर्शाया गया है। इसमें इस्लामी संस्कृति, नैतिकता, मानवीय मूल्य को दर्शाया गया है, जबकि अश्लीलता, फूहड़ता से दूर किन्तु आकर्षक, सुन्दर, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक दृश्यों का समावेश है।

एवं ऐतिहासिक दृश्यों का समावेश है।

सुन्दर पर्वत, हरे भरे घने जंगल, नदी, झरने एवं समुद्र के मनमोहक व ख़ूबसूरत दृश्य दर्शकों को स्क्रीन की ओर आकर्षित करते हैं। पूरे सीरिज़ में तलवारबाज़ी, तीर, धनुष एवं भाले का ही प्रयोग दिखलाया गया जो इसे रोमांचक बनाते हैं एवं इतिहास दर्शन की झलकियां प्रस्तुत करते हैं। किरदारों द्वारा प्रयोग की गई कपड़ों की पुरानी शैली क़बीलाई जीवन का सुन्दर चित्रण है। इस सीरियल की सबसे बड़ी विशेषता इसका संवाद ही है जो पूरे सीरियल को जीवंत बनाता है एवं दर्शकों के रोम-रोम में क्रांति का संचार करता है। महत्वपूर्ण संवाद के दौरान आकर्षक संगीत का भी प्रयोग हुआ है। संवाद के दौरान ऐतिहासिक कथाओं एवं घटनाओं से भी कनेकशन नज़र आता है जैसे हाबिल, काबिल की कहानी, यूनुस (अलैहि.) का मछली के पेट से वापस आना या यूसुफ़ (अलैहि.) का कुएं से मुसीबत में निकलना जैसी घटनाओं से अर्तरुल प्रेरणा लेते नज़र आते हैं।

इस सीरियल से आध्यात्मिक सीख, जीवन से सबक़, न्याय को प्राथमिकता, बेगुनाह एवं कमज़ोर लोगों की सहायता और ईश्वर पर अटूट भरोसा रखने की प्रेरणा मिलती है।

ऐसा नहीं है कि इसके केवल सकारात्मक पक्ष हैं और यह आलोचनाओं से परे है, बल्कि जितनी चीज़ें इसमें दिखाई गई हैं इतना विवरण तो इतिहास में मिलता ही नहीं है साथ ही हिन्दी फ़िल्मों की तरह ढेरों फाल्स दृश्य दिखाए गए हैं। जो प्रयोगिक जीवन में सम्भव नहीं है।

कई किरदारों का अचानक से ग़ायब हो जाना, वही खुलेआम क़त्ल के दृश्य, एक ही ख़ंजर से पांच बार मारने पर एक किरदार का ज़िंदा रह जाना, वहीं एक ही ख़ंजर से मर जाना बिल्कुल अतार्किक प्रतीत होते हैं।

इस सीरियल की प्रोडक्शन कम्पनी तकदेन फ़िल्म है, जबकि प्रोड्यूसर मेहमत बोजदेग हैं, निर्देशक मतीन गुने हैं। मूल रूप से यह टर्किश भाषा में है जबकि अधिकतर सूटिंग तुर्की के रीवा, इस्तम्बूल में हुई है।

मुख्य कलाकार : एंजिन एल्तान (अर्तरुल ग़ाज़ी), एसरा बोल्जिक (हलीमा सुल्तान), सरदार गोख़ान (सुलेमान शाह), हुलिया डार्किन (हायमा ख़ातून), मुरात गैरीपागलो (सआदतीन कोपेक), सरदार दैनिज (टाइटूस), उस्मान शौकत (इब्नुल अरबी), बैरिस बैगु (नोयान) आदि।

आर्ट एवं कल्चर जीवन का अभिन्न अंग है, स्मार्ट फ़ोन के आगमन से मनोरंजन के साधन सुलभ हुए हैं ऐसे में समझ रखने वाले महानुभाव एवं बुद्धिजीवियों को मनोरंजन के इस नए मॉडल के दो, चार एपिसोड का आनन्द अवश्य लेना चाहिए।



अफ़ग़ानिस्तान :

साम्राज्यवादी विनाशलीला की अंतर्कथा

विश्व पटल

सैयद ख़लीक़ अहमद

15 अगस्त 2021 को काबुल का तालिबान के अधिकार क्षेत्र में चले जाने के बाद से ही मैं मीडिया पर, ख़ासकर भारतीय मीडिया पर गहरी नज़र रख रहा हूं। जहां तालिबान ने पूर्व अफ़ग़ान सरकार के विरोध न होने पर आसानी से काबुल पर क़ब्ज़ा कर लिया। वहीं अफ़ग़ानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अशरफ़ ग़नी अपने देश के नागरिकों और समर्थकों को बेसहारा छोड़कर भाग गए। भारतीय मीडिया तालिबान के ख़िलाफ़ शुरू से ही बहुत आक्रामक रहा है।

अमेरिका का घोषित धर्मयुद्ध

अफ़ग़ानिस्तान में 20 साल तक जो कुछ भी चला, उसमें भारत एक पक्ष के रूप में कभी मौजूद नहीं था। अमेरिका, नाटो और विदेशी आक्रमणकारी तालिबान पर हमला करने के लिए अत्याधुनिक हथियारों के साथ अफ़ग़ानिस्तान आए। उनका आरोप था कि सितंबर 2001 में वाशिंगटन में ट्विन टावर्स पर हमले के पीछे तालिबान शासन द्वारा अफ़ग़ानिस्तान में शरण लिए अल-क़ायदा का हाथ है। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने तालिबान के ख़िलाफ़ युद्ध को धर्मयुद्ध कहा और मुस्लिम तालिबान के ख़िलाफ़ एक ईसाई युद्ध शुरू किया। बुश ने चेतावनी दी कि जो लोग इस तथाकथित धर्मयुद्ध में अमेरिका और उसकी गठबंधन सेना के साथ नहीं हैं, वे इस युद्ध को लड़ने वाले धर्म योद्धाओं के ख़िलाफ़ हैं। धर्मयुद्ध (क्रुसेड) 7 अक्टूबर 2001 को शुरू किया गया था।

एक तरह से देखा जाए तो यह एक धर्मयुद्ध ही था। अफ़ग़ानिस्तान में बहुसंख्यक पश्तो भाषा बोलते हैं। विश्व की महाशक्ति के नेतृत्व में ईसाई ताक़तों ने अफ़ग़ानिस्तान के क़स्बों और गांवों में पश्तो भाषा में बाइबल की प्रतियों की ऐसी बारिश कर दी मानो अमेरिका और नाटो सेना पहाड़ी अफ़ग़ानिस्तान में ईसाई धर्म का प्रचार करने के मिशन पर हो।

अल-क़ायदा के बहाने मानवाधिकार का घोर उल्लंघन और सभ्य दुनिया की चुप्पी अल-क़ायदा समाप्त हो चुका था। इसके सरग़ना ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान में पकड़ लिया गया। वह मारा गया, और उसके शरीर को समुद्र में डुबो दिया गया था ताकि तालिबान और उसके समर्थक लोगों द्वारा हीरो माने गए और महाशक्ति अमेरिका और उसके गठबंधन समूहों की ताक़त को ज़बरदस्त चुनौती देने वाले व्यक्ति का कोई अवशेष बाक़ी न रहे। सैकड़ों तालिबान लड़ाकों और उनके नेताओं को पकड़ा गया, उन्हें कुख्यात ग्वांतानामो जेल में रखा गया। सभी मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए उन्हें बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया।

ईसाई अमेरिका और उसके गठबंधन सहयोगियों द्वारा किए गए मानवाधिकारों के उल्लंघन पर "सभ्य" दुनिया को चुप रखने के लिए ज़ुल्म की ख़बरें बाहर आने से रोकी गईं। इंटरनेट और मीडिया द्वारा प्रकाशित कई तस्वीरों से दुनिया को पता चला कि कैसे पकड़े गए तालिबान लड़ाकों को जानवरों की तरह बांधा और खींचा जाता है, और उन पर ज़ुल्म किया जाता है। उन तस्वीरों को देखकर बहुत डर लगता था।

कई ऑस्ट्रेलियाई सैनिकों के बारे में उस वक़्त बताया गया कि उन्होंने तीन दर्जन से अधिक अफ़ग़ान नागरिकों की सिर्फ़ मस्ती के लिए नृशंस हत्या कर डाली। ह्यूमन राइट्स वॉच दुनिया के सामने इस बात को प्रकाश में लेकर आया कि कैसे ब्रिटेन के विशेष बलों ने आधी रात को घरों में घुसकर नाबालिगों सहित निहत्थे नागरिकों को मार डाला।

अफ़ग़ानिस्तान में ह्यूमन राइट्स वॉच की सीनियर रिसर्चर पेट्रीसिया गॉसमैन के अनुसार, "यह एक बीमार मानसिकता और संस्कृति थी जो अनिवार्य रूप से इन संकटग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले अफ़ग़ानों के साथ ऐसा व्यवहार था जैसे कि वे सभी ख़तरनाक अपराधी हो, यहां तक कि बच्चों को नहीं बख़्शा गया, बल्कि उन सभी को इंसान ही नहीं माना गया।" जहां ऑस्ट्रेलिया ने अपने क्रूर सैनिकों को दंडित किया, वहीं ब्रिटेन सरकार ने राजनीतिक दबाव में मानवाधिकारों का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की है।

अल-क़ायदा के बहाने मानवाधिकार का घोर उल्लंघन और सभ्य दुनिया की चुप्पी अल-क़ायदा समाप्त हो चुका था। इसके सरग़ना ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान में पकड़ लिया गया। वह मारा गया, और उसके शरीर को समुद्र में डुबो दिया गया था ताकि तालिबान और उसके समर्थक लोगों द्वारा हीरो माने गए और महाशक्ति अमेरिका और उसके गठबंधन समूहों की ताक़त को ज़बरदस्त चुनौती देने वाले व्यक्ति का कोई अवशेष बाक़ी न रहे। सैकड़ों तालिबान लड़ाकों और उनके नेताओं को पकड़ा गया, उन्हें कुख्यात ग्वांतानामो जेल में रखा गया। सभी मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हुए उन्हें बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया।

मौत का तांडव

फॉर्च्यून डॉट कॉम के अनुसार विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा अफ़ग़ानिस्तान पर थोपे गए युद्ध के कारण अनुमानित 75,000 अफ़ग़ान सैन्य और पुलिस अधिकारी मारे गए, और इसके अलावा अनुमानित 71,334 नागरिक मारे गए। अल-जज़ीरा के अनुसार, हमलावर देशों के 3,500 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सैनिक भी मारे गए। मारे गए विदेशी सैनिकों में 2,448 अमेरिकी सैनिक शामिल हैं। अमेरिका के ब्राउन विश्वविद्यालय के कॉस्ट ऑफ़ वार प्रोजेक्ट के अनुसार युद्ध में मारे गए तालिबान और अन्य अमेरिकी विरोधी लड़ाकों की संख्या 51,191 है।

पश्चिमी मीडिया का प्रोपेगंडा वार ऑस्ट्रेलिया से संबंध रखने वाली एक शिक्षाविद सहर घुमखोर और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में मानव विज्ञान विभाग में चांसलर फेलो अनिला दौलतज़ई, बताती हैं कि कैसे

तालिबान पर चौबीसों घंटे फोकस करने वाले पश्चिमी मीडिया के लिए अमेरिका और उसके युद्ध सहयोगी दलों द्वारा किए गए मूर्खतापूर्ण नरसंहार और विनाश कोई मायने ही नहीं रखते हैं। अल-जज़ीरा में एक संयुक्त लेख में दोनों लेखिका कहती हैं कि कैसे "अफ़ग़ान समुदायों को आतंकित किया गया और एक षड्यंत्र के तहत उन्हें सामूहिक रूप से संदिग्ध बनाया गया, जिसके कारण प्रत्येक अफ़ग़ान पुरुष एक संभावित आतंकवादी समझा जाने लगा, और यह बताया गया कि प्रत्येक अफ़ग़ान महिला को तालिबान के प्रतिबंधों से बचाने की ज़रूरत है।" पश्चिमी सरकारों और मीडिया द्वारा एक प्रोपेगंडा फैलाया गया था कि "तालिबान की वजह से हुई मौतें ज़्यादा घातक थी उन मौतों के मुक़ाबले जो अफ़ग़ानी नागरिकों की अमेरिकी ड्रोन हमले, हवाई हमले, सीआईए द्वारा प्रशिक्षित और वित्त पोषित अफ़ग़ान सेना और साम्राज्यवादी ताक़तों को गले लगाने वाले आपराधिक प्रवृति के कमांडरों द्वारा अंजाम दी गई।

घूमखोर और दौलतज़ई के अनुसार, तालिबानी हिंसा को "अनियंत्रित व्हाइट हिंसा, व्हाइट क़ब्ज़े, व्हाइट एस, व्हाइट ड्रोन से अधिक ख़तरनाक" के रूप में चित्रित किया गया है। हमेंशा यह बताया जाता है कि पश्चिम द्वारा की जाने वाली हिंसा के विपरीत तालिबानियों की हिंसा जान-बूझकर की गई बर्बरता, और निंदनीय है। पश्चिम द्वारा की गई हिंसा आधुनिक और बर्बरता के फ़र्क़ को स्पष्ट करती है। इसलिए अतिक्रमण करने वाली पश्चिमी ताक़तों द्वारा स्वयं की हिंसा को हमेंशा उचित ठहराया जाता है और उसे अतार्किक या नाजायज़ नहीं बताया जाता। पश्चिमी मीडिया तालिबान की हिंसा पर प्रकाश डालते समय



तालिबानी पश्तून को ग्रामीण रूढ़िवादी और पिछड़े रूप में दिखाता है, उनके इस स्वरूप को अफ़ग़ानिस्तान की प्रगति को रोकने वाला बताता है। लेकिन ये वैश्विक मीडिया अमेरिका और उसके युद्ध सहयोगी दलों के कारण हुई तबाही पर टिप्पणी नहीं करते हैं और न ही ये बताते हैं कि कैसे दो दशकों के विदेशी क़ब्ज़े ने अफ़ग़ानिस्तान के विकास को रोक दिया है और इसे मध्ययुगीन काल तक पीछे धकेल दिया है।

मीडिया की मनगढ़ंत कहानियां

अधिकांश विदेशी मीडिया और सरकारें अफ़ग़ानिस्तान या तालिबान को लेकर जो रिर्पोट दुनिया के समक्ष पेश करती हैं, वे सब गढ़ी हुई कहानियां हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य धोखा देना है। वे यह कभी नहीं बताएंगे कि 1996 में रूसियों के जाने के बाद बनी गुलबुद्दीन हिकमतयार की सरकार को गिराने के लिए तालिबान को किसने तैयार, प्रशिक्षित और हथियारों से लैस किया था। पश्चिमी ईसाई शक्तियों की साज़िश के द्वारा हिकमतयार को बाहर निकालने का एकमात्र कारण यह था कि उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान में इस्लाम के क़ानूनों को लागू करने की घोषणा की थी। तालिबान ने भी इस्लामिक क़ानूनों पर आधारित एक इस्लामिक अमीरात स्थापित करने

अधिकांश विदेशी मीडिया और सरकारें अफ़ग़ानिस्तान या तालिबान को लेकर जो रिर्पोट दुनिया के समक्ष पेश करती हैं, वे सब गढ़ी हुई कहानियां हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य धोखा देना है। वे यह कभी नहीं बताएंगे कि 1996 में रूसियों के जाने के बाद बनी गुलबुद्दीन हिकमतयार की सरकार को गिराने के लिए तालिबान को किसने तैयार, प्रशिक्षित और हथियारों से लैस किया था।

की घोषणा की है। इसी वजह से पश्चिमी शक्तियों ने तालिबान द्वारा बनाई जाने वाली सरकार के अस्तित्व को नकारना तय किया है। यह इस्लाम के लिए पश्चिमी शक्तियों की ख़ास नफ़रत को भी प्रदर्शित करता है।

भारतीय मीडिया, पश्चिमी मीडिया का प्रोपेगंडा विस्तार

अब बात करते हैं अपने देश भारत में तालिबान पर मीडिया और बुद्धिजीवियों की भूमिका पर। भारतीय मीडिया, चाहे वो हिंदी हो या अंग्रेजी, ने पश्चिमी मीडिया की नक्काली करके तालिबान के ख़िलाफ़ एक प्रोपेगंडा का प्रचार किया है कि कैसे यह समूह इस क्षेत्र को नष्ट कर देगा, सभ्यता को मिटा देगा और अपनी महिलाओं को दास के रूप में परिवर्तित कर देगा। भारतीय मीडिया द्वारा फेक वीडियो और तस्वीरों के माध्यम से भी तालिबान को बर्बर दिखाने की कोशिश की गई, इन वीडियोज़ और तस्वीरों को न्यूज़ वेबसाइट ऑल्ट न्यूज़ द्वारा फैक्ट चेक कर ग़लत बताया गया है। भारत तालिबान के ख़िलाफ़ युद्ध में भागीदार नहीं था। फैक्ट तो यह है कि

तालिबान के प्रवक्ता ने भी एएनआई समाचार एजेंसी के साथ एक साक्षात्कार में इसकी सराहना की है। इसका मतलब है कि तालिबान भारत के साथ दोस्ती चाहता है, और इसलिए, उन्हें अपने वादों को साबित करने की अनुमति दी जानी चाहिए जो उन्होंने दो दिन पहले काबुल में पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिए थे।



भारत अफ़ग़ानिस्तान में सड़कों, बांधों, बिजली उत्पादन संयंत्रों के निर्माण के लिए दान और विकास कार्यों में लगा हुआ था। तालिबान के प्रवक्ता ने भी एएनआई समाचार एजेंसी के साथ एक साक्षात्कार में इसकी सराहना की है। इसका मतलब है कि तालिबान भारत के साथ दोस्ती चाहता है, और इसलिए, उन्हें अपने वादों को साबित करने की अनुमति दी जानी चाहिए जो उन्होंने दो दिन पहले काबुल में पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिए थे। उन्होंने साफ़ तौर पर कहा है कि वे किसी भी देश के ख़िलाफ़ अफ़ग़ानिस्तान की धरती का इस्तेमाल नहीं होने देंगे। उन्होंने यह भी कहा है कि महिलाएं प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र हैं। उन्होंने तालिबान के ख़िलाफ़ लड़ने वाले पिछले शासन के सैनिकों सहित सभी को माफ़ी देने की भी घोषणा की है। वे 1990 के तालिबान नहीं हैं। यह बहुत बदल गए हैं। यही कारण है कि जब उन्होंने 15 अगस्त को काबुल पर क़ब्ज़ा किया था तब सड़कों और गलियों में किसी प्रकार की कोई मार-काट नहीं देखी गई। वे युद्धग्रस्त देश में क़ानून-व्यवस्था बहाल करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

तालिबान : जिसकी मातृभूमि अफ़ग़ानिस्तान है

तालिबान की अकस्मात जीत से भारतीय मीडिया भी हैरान है। तालिबान के लिए मेरे पास कोई विस्तृत जानकारी नहीं है। डॉ. जफ़रुल इस्लाम ख़ान के अनुसार अफ़ग़ानिस्तान तालिबानियों की मातृभूमि है। वे इसलिए जीत गए क्योंकि उन्हें स्थानीय लोगों का समर्थन प्राप्त है। तालिबान ने "विदेशी आक्रमणकारियों" के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी। तालिबान की जीत भारी जन समर्थन के बिना संभव नहीं थी, जबकि कठपुतली सरकार विदेशी ताक़तों के समर्थन से सत्ता में थी और जल्द ही अफ़ग़ानिस्तान में अवैध क़ब्ज़ा करने वाली ताक़तों ने महसूस कर लिया कि क़ब्ज़ा व्यर्थ है और वे विदेशी ग़ुलामी कुबूल न करने वाले अफ़ग़ानिस्तान के लोगों के ख़िलाफ़ युद्ध नहीं जीत सकते हैं। ब्रिटिश और रूस इस कड़वी सच्चाई का अनुभव बहुत पहले ही कर चुके थे।"■■

"जिस व्यक्ति के साथ
अल्लाह भलाई चाहता है,
उसे धर्म में समझ
प्रदान करता है।"
(हदीसः मुस्लिम)



Zam Zam
Jewellers

इतिहास के
झरोखे से

सादिक़ परवेज़



1857 का विद्रोह

एक समीक्षात्मक अध्ययन

भारत में अंग्रेज़ी सत्ता की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने की पूर्व संध्या पर एक शक्तिशाली जन-विद्रोह उठ खड़ा हुआ था, यह विद्रोह एक व्यापक रूप में परिवर्तित हो गया था। परिणामस्वरूप उत्तर और मध्य भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की जड़ें हिल गईं। इस विद्रोह का आरंभ तो कंपनी की सेना के भारतीय सिपाहियों से हुआ, लेकिन विभिन्न आयामों एवं नेतृत्व ने इसे व्यापक रूप प्रदान किया। सैनिक विद्रोह ने लाखों किसानों, दस्तकारों तथा ज़मींदारों की साझीदारी के ज़रिए एक वर्ष से अधिक 'संघर्ष' की वह गाथा लिखी, जिसने भारतीय इतिहास में एक शानदार अध्याय जोड़ा।

निःसंदेह इस विद्रोह का आरंभ सैनिकों ने किया परंतु विभिन्न वर्गों की भागीदारी ने इस विद्रोह को बहुमुखी स्वरूप भी प्रदान किया। इस विद्रोह के स्वरूप तथा प्रकृति को लेकर इतिहासकारों के बीच मतभेद पाए जाते रहे हैं।

ब्रिटिश इतिहासकारों ने इसे सिपाही विद्रोह, सामंतवादी प्रतिक्रिया, हिंदू, मुस्लिम, षड्यंत्र आदि की संज्ञा दी है, जबकि अधिकांश भारतीय इतिहासकार इसे राष्ट्रीय आंदोलन स्वीकार करते हैं,

जो भारत की आज़ादी के लिए लड़ा गया। इस मतभेद में हमें साम्राज्यवादी इतिहासकारों के मानसिक छलावा तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवादी इतिहासकारों की अतिशयोक्ति और द्वंद स्पष्ट प्रतीत होता है। इतिहासबोध हमेंशा समीक्षात्मक विश्लेषण की कसौटी पर परखा जाता है, जिसका मुख्य आधार तथ्यों की समीक्षा है। इस लेख में हम मुख्य इतिहासकारों तथा प्रमुख स्कूल के पक्ष (मत) के ज़रिए 1857 के विद्रोह के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन करेंगे।

इतिहासकारों के विभिन्न मतों से पहले यह आवश्यक मालूम होता है कि हम विद्रोह, क्रांति एवं आन्दोलन पर तुलनात्मक दृष्टि डालें ताकि 1857 का स्वरूप अधिक स्पष्ट हो सके।

विद्रोह - इसका भौगोलिक स्वरूप छोटा होता है।

–विद्रोह का उद्देश्य अस्पष्ट होता है।

–यह हमेंशा पक्षगामी होता है, यानी वह समय से पीछे होता है।

–इसमें नेतृत्व की कमी होती है, अगर नेतृत्व नज़र भी आते हैं, तो बहुत सुक्ष्म होते हैं।

* विभिन्न बिंदुओं को सामने रखकर इतिहासकारों ने 1857 को विद्रोह की श्रेणी में रखा है।

क्रांति-क्रांति में लीडरशिप अधिकतर अस्पष्ट रहती है।

–क्रांति का उद्देश्य स्थापित व्यवस्था में त्वरित अमूल परिवर्तन होता है।

–क्रांति में कार्यक्रम गुप्त रूप से चलते हैं और लाइसेंस भी होता है।

उदाहरण-फ्रांस की क्रांति (1789), रूस की क्रांति (1917)

आन्दोलन-आन्दोलन एक लंबी प्रक्रिया होती है।

–इसमें नेतृत्व स्पष्ट होता है।

–एक से अधिक विचारधाराओं का संबंध होता है।

–कार्यक्रम होते रहते हैं।

उदाहरण- भारत का स्वतंत्रता संग्राम

'1857' विद्रोह पर अहम इतिहासकारों के पक्ष

* आर. रीज-के अनुसार यह विद्रोह धर्मांधों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध था।

* सर जेम आउटरम (Outram)-की राय के अनुसार यह विद्रोह "मुसलमानों का षड्यंत्र" ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध था।

* आर. होम्स-बर्बरता और सभ्यता के बीच षड्यंत्र की संज्ञा दी है।

* बेंजामिन डिजरायली-27 जुलाई 1857 ई, को हाउस ऑफ़ कॉमन्स ने कहा कि यह आन्दोलन एक "राष्ट्रीय विद्रोह" था।

* लवरेंस और सीले-इसका मत यह है कि यह वास्तविक रूप से सैनिक विद्रोह था।

आर. सी. मजूमदार-रमेंश चंद्र मजूमदार ने यह निष्कर्ष निकाला है कि 1857 का विद्रोह न तो पाथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था। यह ब्रिटिश प्राधिकारियों के शोषक शासन के विरुद्ध आम जनता का सहज विद्रोह था। इसे सैनिकों का विद्रोह माना गया है जो धर्म हेतु संघर्ष के रूप में आरंभ हुआ।

* जॉन विलियम काय (kaye) के अनुसार यह सैनिक विद्रोह था।

* तलमीज खलदून-आरंभ में यह सैनिक विद्रोह था, परंतु बाद में यह जन-विद्रोह में परिवर्तित हो गया।

* मालेसन (Malleson)-यह विद्रोह "सैनिक विद्रोह" के साथ-साथ बाहरी नेतृत्व के रूप में भी उभरा।

* कार्ल मार्क्स-आंशिक स्वतंत्रता संग्राम तथा वर्ग संघर्ष के रूप में देखा है।

* वी. डी. सावरकर-सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी है।

* एस. बी. चौधरी-इसे सैनिक एवं जन-विद्रोह कहा है।

उनका मत है कि विभिन्न वर्गों की साझेदारी के साथ विदेशी सभा के विरुद्ध व्यापक प्रयास था।

* थॉमस मेंटलाफ़-यह विद्रोह सैनिक विद्रोह से अधिक किंतु राष्ट्रीय विद्रोह से कम था।

* सी. ऐ. बेली-यह विद्रोह एक से अधिक वर्गों के समन्वय से आक्रोश था।

* जे. (Judith) ब्राउन-इनका मानना है कि इस विद्रोह के निर्णयकर्ता सामंतवादी तत्व थे।

* कैथलीन गफ्फ (j. Gough)-इनका मत है कि यह पुनर्स्थापन आन्दोलन था जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार का निष्कासन और विनाश है।

* परसीवल स्पेयर-यह विद्रोह अपरिवर्तनवादी एवं रूढ़िवादी शक्तियों का पश्चिमी दुनिया के विरुद्ध उत्साही विरोध था।

* ऐरिक स्ट्रोक-यह एक ग्रामीण विद्रोह था जो प्रसिद्ध भागीदारी में परिवर्तित हो गया।

* अशोक मेहता-अपनी पुस्तक "The Great Rebellion" में इसे राष्ट्रीय विद्रोह कहा है।



* एस. एन. सैन-"Eignteen fifty Seven" नामक पुस्तक में तर्क देते हैं कि यद्यपि इसे "राष्ट्रीय संग्राम" नहीं कहा जा सकता, परंतु इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा देना भी ग़लत होगा, क्योंकि यह कहीं भी केवल सैनिकों तक सीमित नहीं रहा।

* आर. सी. मजूमदार-रमेंश चंद्र मजूमदार ने यह निष्कर्ष निकाला है कि 1857 का विद्रोह न तो पाथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था। यह ब्रिटिश प्राधिकारियों के शोषक शासन के विरुद्ध आम जनता का सहज विद्रोह था। इसे सैनिकों का विद्रोह माना गया है जो धर्म हेतु संघर्ष के रूप में आरंभ हुआ।

* शशि भूषण चौधरी-अपनी पुस्तक "Civil Rebellion an Indian ....." में इस विद्रोह को सैनिक और असैनिक विद्रोहों के समीकरण के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि इस विद्रोह का पहले के कृषक विद्रोह से संबंध देखा जा सकता है। उन्होंने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि मूल रूप से लोग अपनी संस्कृति तथा तौर तरीक की रक्षा करने का प्रयास कर रहे थे।

* गोतम भद्रा-ने मत पेश किया है, कि यह पहला प्रयास था, जब समाज के एक से ज़्यादा नेतृत्व नज़र आते हैं, परंतु अलग-अलग उद्देश्य हेतु कॉमन शत्रु को पहचाना था।

* विपिन चंद्र-सैनिक अस्ल में किसान थे, जो वर्दी की वजह से कुछ दिनों तक शोषित होते रहे थे, अंततः ग्रामीणों के साथ मिलकर उन्होंने शोषण के ख़िलाफ़ हिंसक विरोध किया।

* आर. मुखर्जी-इनका मानना है कि सैनिक मुख्यतः किसान ही थे जो सेना की वर्दी जीविकोपार्जन के लिए धारण किए थे, उनकी तमाम गतिविधियां किसानों की तरह थी।

आर. मुखर्जी ने यह मत भी पेश किया है कि इस विद्रोह में आर्थिक कारण से ज़्यादा व्यापक कारण विचारधारा थी।

* रजत रै-यह ये मत पेश करते हैं कि वास्तव में यह विद्रोह "हिंदू, मुस्लिम बंधुत्व का जीवंत उदाहरण है"।

भारतीय इतिहास लेखनशैली के संबंध में 1857 विद्रोह के स्वरूप एवं प्रकृति को इतिहासकारों के पांच संप्रदाय (स्कूल) में प्रमाणित करने की कोशिश की है ।

ये पांच स्कूल निम्नलिखित है–

(क) साम्राज्यवादी

(ख) वामपंथी

(ग) राष्ट्रवादी अथवा दक्षिणपंथी

(घ) कैम्ब्रिज स्कूल

(ड.) subaltern (subaltern)

क) साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने इसे सिर्फ़ सिपाही विद्रोह के रूप में प्रमाणित करने की कोशिश की है। उनका मत यह है कि ब्रिटिश सत्ता में प्रशासनिक विभेद होने के कारण सैनिक असंतोष का जन्म हुआ जिसने अंततः विद्रोह का स्वरूप ले लिया। यद्यपी इन त्रुटियों को सुधार किया जाता तो कोई विद्रोह समस्या उत्पन्न नहीं होती ।

साम्राज्यवादी इतिहासकारों में भी आंतरिक मतभेद मिलता है। इस संप्रदाय

के कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह ईसाइयों के ख़िलाफ़ हिंदू-मुस्लिम धार्मिक षड्यंत्र था।

साम्राज्यवादी इतिहासकारों का तीसरा धरा इस विद्रोह को बर्बरता और सभ्यता के बीच षड्यंत्र कहते हैं।

भारतीय इतिहासकारों ने और बुद्धिजीवियों ने इस संप्रदाय के मतों का खण्डन करते हुए कहा है कि साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने ऐसा मत इसलिए पेश किया है, क्योंकि वह यह संदेश देना चाहते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश उपनिवेशवाद कमज़ोर पड़ गया है।

(ख) मार्क्सवादी अथवा वामपंथी संप्रदाय-इन इतिहासकारों ने इसे आंशिक स्वतंत्रता संग्राम प्रमाणित करने का प्रयास किया, क्योंकि कार्ल मार्क्स ने भी स्वयं इस प्रकार के विचारों को प्रकट किया था। साथ ही मार्क्स इस विद्रोह को वर्ग संघर्ष के रूप में भी देखता है, वह कहता है कि यहां दो वर्गों का संघर्ष है, एक बाह्य और दूसरा आंतरिक

(ग) केंब्रिज स्कूल एक परंपरागत रूप से यह तर्क देता है कि ये विद्रोह असलन क्षेत्रिय शक्तियों के हाथ में था और कारणवश विद्रोह की रूपरेखा अभिजात्य हो गई थी। इस कारण ग़रीब और भूमिहीनों की तरफ़ से कोई पहल नहीं की गई, और समंतवादियों ने अपने हितों के लिए इस विद्रोह का प्रयोग किया। लेकिन यह मत ग़लत है, क्योंकि केवल नेतृत्व के आधार पर इसमें सामंतवादी उभार को नहीं देखा जा सकता है, और यह तथ्य है कि किसानों और सैनिकों की सभ्यता ने ही इस विद्रोह की रूपरेखा तैयार की थी। इन उपयुक्त कारणों से हम यह कह सकते हैं की यह विद्रोह अपने चरित्र के लिहाज़ से कदापि सामंतवादियों का विद्रोह नहीं



था।

(घ) सबाल्टर्न संप्रदाय के इतिहासकारों का माना है कि यह स्वस्फूर्त विद्रोह था, क्योंकि इस विद्रोह के आरंभ में नेतृत्व नहीं दिखता है।

इनका मत यह है कि जब हम आधुनिक तथ्यों का मूल्यांकन करते है तो हमें इस विद्रोह का स्वरूप एवं ढांचा संघनात्मक नज़र आता है जो कमल और रोटी वाली घटना से स्पष्ट होता है, लेकिन तत्कालीन कारण (सूअर और गाय की चर्बी वाले कारतूसों की घटना) की वजह से यह विद्रोह समय से पहले ही शुरू हो गया इसलिए इस विद्रोह का नेतृत्व हमें बीच से प्रारंभ होता दिखाई पड़ता है।

रंजीत गुहा जैसे इतिहासकार इसी संप्रदाय के हामी हैं।

(ड़) दक्षिणपंथी अथवा राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसे स्वतंत्रता संग्राम प्रमाणित किया। इस स्कूल (संप्रदाय) का सबसे बड़ा नाम वी. डी. सावरकर है। उन्होंने अपनी पुस्तक "The Indian war of Independence , 1857" में इसे "सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम" की संज्ञा दी है। निःसंदेह इस मत से युवाओं में आगामी जनआंदोलन के लिए ऊर्जा का प्रवाह हुआ। लेकिन जब हम इस मत को तथ्यों के आधार पर विचार करते हैं तो यह "अतिशयोक्ति" नज़र आती है।

(1) हम जानते हैं कि इस विद्रोह का भौगोलिक क्षेत्र बहुत कम था।

(2) आरंभ में हमें नेतृत्व का भारी अभाव नज़र आता है, इस विद्रोह में नेतृत्व, विद्रोह के मध्य नज़र आता है।

(3) स्वतंत्रता संग्राम होने के लिए हमें यह भी देखना होगा कि क्या भारत इस समय आधुनिक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में आ चुका था।

(4) जिन लोगों ने नेतृत्व किया उनका इस विद्रोह में उद्देश्य सीमित था ज़्यादा से ज़्यादा इतिहासकारों का मत है कि वह कंपनी के शोषण के ख़िलाफ़ मुखर हो गए थे।

विभिन्न इतिहासकारों के परामर्श एवं इतिहासकारों के पांच संप्रदाय के मतों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट है कि हर मत में कुछ पहलू ग़ौरतलब है और कुछ क़यास (speculation) और तथ्यों से ज़्यादा विचारधाराओं का प्रभाव नज़र आता है। लेकिन वास्तविकता हमें मध्यम मार्ग में दिखती है यानी, यह विद्रोह किसी हद तक सैनिक विद्रोह था तो किसी हद तक ग़ैर-सैनिक। विभिन्न वर्गों की भागीदारी ने इसे पंचमुखी बनाया। लेकिन यह बात स्पष्ट है कि हमें इसमें सामाजिक सहभागिता और राष्ट्रीय चेतना दिखती है। अतः हम कह सकते हैं कि यह भारतीय राष्ट्रवाद की चेतना का वृहद रूप था। ■■

कहानी



अनवर साहिल

सामाजिक मामला

उसके घर से आज भी चीखने-चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी। आज वो फिर पी कर मेहरारू को पीट रहा था।

"तुम सोई नहीं अब तक, अरे ये तो रोज़ का मामला है। उस पियक्कड़ से कौन बात करे, सबको गरिया देता है। ख़ैर उसका परिवारिक मामला है! तुम सो जाओ।"

सुबह आंख खुली तो ख़बर मिली कि बेचारी पिटाई बर्दाश्त नहीं कर पाई, चल बसी।

अब समाज क्रियाक्रम के लिए जुट रहा है। अब यह आंतरिक नहीं सामाजिक मामला है।

भक्तिमय

इस दरिद्र गांव से स्वामी जी का गुज़र हुआ। गांव के मुहाने पर एक गोल बैठकी बनी हुई थी। बीच में एक छोटा-सा पीपल का पौधा अपनी दो-चार पत्तियों के साथ जीवन संघर्ष कर रहा था। अप्रैल का तपता महीना।

स्वामी जी ने सोचा अगर यह पीपल बड़ा होकर छायादार दरख़्त बन जाए तो राहगीर यहां कुछ पल आराम कर सकेंगे। लोग रुकेंगे तो छोटी-मोटी ज़रूरतों का सामान भी ख़रीदेंगे। चाय-पान की दुकान से कुछ लोगों को रोज़गार भी मिल जाएगा।

बगल के चापाकल से एक लोटा पानी भरकर पीपल में डाल दिया। लोगों से कहा यहां जल अर्पण करो। गांव में आर्थिक समृद्धि आएगी।

लोग भक्तिमय हो गए। सुबह-शाम जल चढ़ने लगा।

जुलाई के झमाझम बारिश में भी लोग पानी चढ़ाना नहीं भूलते।

हुआ वही जो होना था। पीपल की जड़ें गल गई। पौधा मर गया। लोगों ने ग्रामीणों की भक्ति भाव को कोसा।

अस्तित्व

कोयलों ने घोसलाबन्दी कर दी थी। अब कोई कौवा अपने अंडे उनके घोंसले तक पहुंचा ही नहीं पा रहा था। कौवों का अस्तित्व ख़तरे में था। कौवों ने एक तरक़ीब सोची।

एक कोयल से दोस्ती की गई।

"भाई कोयल ऊंचे आसमानों में पहाड़ी के उस पार अस्ल दुनिया है, ख़ूबसूरत जहां" कौवे ने कहा।

"हम कहां कभी उस ओर जा पाते हैं, तुम्हारे पंख बहुत बड़े हैं, वह सब मौज हमारे नसीब में कहां?"

"कोयल ने उदास होकर कहा।"

"मामला नसीब का नहीं हम अपने अंडे नहीं सेते, इससे हमारा बहुत समय बचता है, हम उस समय में पहाड़ों की उड़ान भरते हैं, दूर-दूर उड़ते हैं।"

"हां पर मैं चाह कर भी ऐसा नहीं कर सकता हूं" कोयल ने कहा।

"क्यों?? हमारी तरह तुम भी अपने घोंसले से अंडा दूसरे कोयल के घोंसले में डाल दो और चलो दूर सैर पर। मज़े से उड़ो।" कौवे ने सुझाया।

"अब यह कोयल रोज़ सुबह अपने घोंसले से अंडा दूसरे कोयलों के घोस...।"

थोड़ी अशान्ति

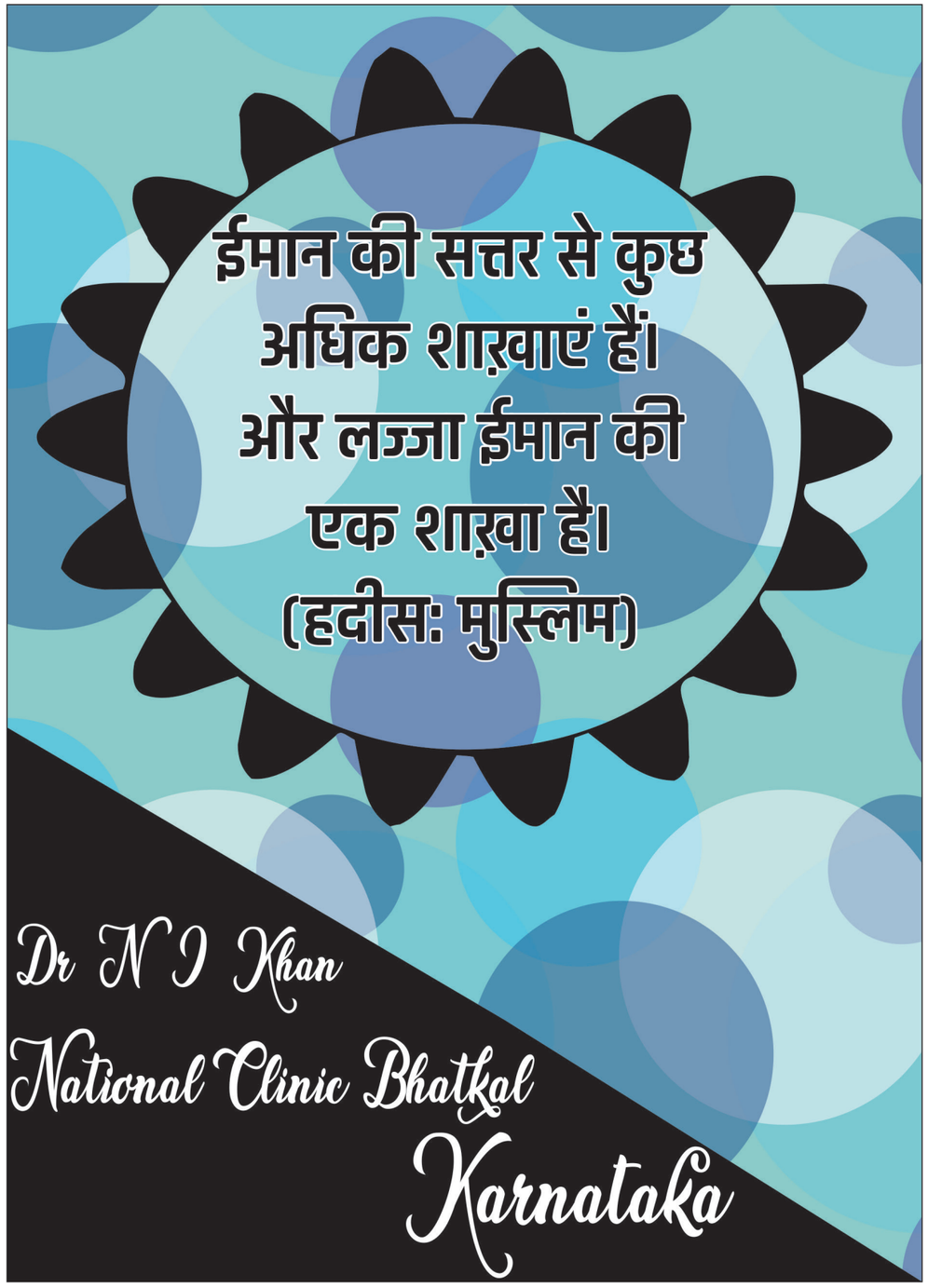
टिड्डियों के हमले से लगातार हरियाली ख़त्म हो रही थी। मधुमक्खियों का भविष्य बहुत अंधकारमय लग रहा था। टिड्डियों से भिड़ने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी।

बग़ीचों को छोड़ तमाम जंगल चट कर चुके टिड्डे भी मधुमक्खी से नहीं टकराना चाहते थे। जंगल धर्म रोक लेता था।

इसी बीच दूसरे जंगल मजराज भौड़ा स्वामी का गुज़र इस ओर हुआ। उन्होंने प्रवचन दिया "मनुष्य की तरह हमें भी आगे बढ़ना चाहिए। थोड़ी अशान्ति, शांति के लिए ज़रूरी हो तो, की जा सकती है।"

टिड्डियों को मौक़ा मिल गया। भौड़ा पंथ अपना कर बग़ीचे पर हमला को न्यायोचित ठहराया गया। फल-फूल-कली-पत्तियां कुछ नहीं बचा।

अब टिड्डियां आगे बढ़े। आगे भौड़ा स्वामी का जंगल था। वह भी नहीं बचा। भौड़ों को भी अपना घर-शान्ति छोड़कर भागना पड़ा।



कविताएं



रेने मारिया रिल्के

दुखड़ा

सब कुछ दूर है
और बहुत पहले ख़त्म हो चुका है।
मुझे लगता है
मेंरे ऊपर चमकता हुआ तारा
करोड़ों बरस पहले मर चुका है।
मुझे लगता है
मेंरे क़रीब से गुज़री कार में
आंसू थे और
कुछ भयानक कहा गया था।
सड़क के उस पार
एक मकान में घड़ी का बजना कब का बंद हो चुका है
ये शुरू ही कब हुआ था...
मैं अपने दिल से निकलकर
अज़ीम आसमान तले टहलना चाहता हूं।
दुआ करना चाहता हूं।
बेशक बहुत पहले
ख़त्म हो चुके उन तमाम सितारों में
एक अब भी बाक़ी है।
मुझे लगता है कि मैं जानता हूं
ये कौन है
वो जो आकाश में अपनी किरण के आख़िरी छोर पर
किसी सफ़ेद शहर की तरह मौजूद है।

अंधे आदमी का गीत

मैं अंधा हूं, ऐ अजनबियों।
ये एक लानत है,
एक द्वंद, एक थकाऊ स्वांग,
मेंरा मुसलसल दुख।
मैं अपनी पत्नी की बांहों पर हाथ धरता हूं
(बे-रंग कलाई पर बे-रंग हाथ)
और वो मुझे बंजर हवाओं की सैर कराती है।

तुम धक्के देते हो और समझते हो कि यह
पत्थरों के टकराव से अलग है,
हाय तुम्हारी नादानी, मैं अकेला ही
जीता हूं, मरता हूं, रोता हूं।
मेंरे भीतर एक असीम चीख बसती है
और मैं नहीं जानता कि ये मेंरा
टूटा हुआ दिल रोता है या मेंरी अत्ड़ियां।

क्या तुम इन धुनों से परिचित हो? इन्हें ऐसे मत गाओ:
तुम समझ ही कैसे सकते हो?
धूप हर सुबह तुम्हारे घर में आ जाती है और तुम
एक दोस्त की तरह इसका स्वागत करते हो।
तुम्हें मालूम है आमने-सामने देखना क्या होता है
यही तो है जो तुम्हे मेंहरबान बनाता है।

(अनुवाद : उसामा हमीद)

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो,
(अल्लाह के आगे) झुको और
सजदा करो, और अपने रब की बन्दगी
करो, और अच्छे कर्म करो, इसी से
उम्मीद की जा सकती है कि तुमको
सफलता प्राप्त हो ।
(क़ुरआन)

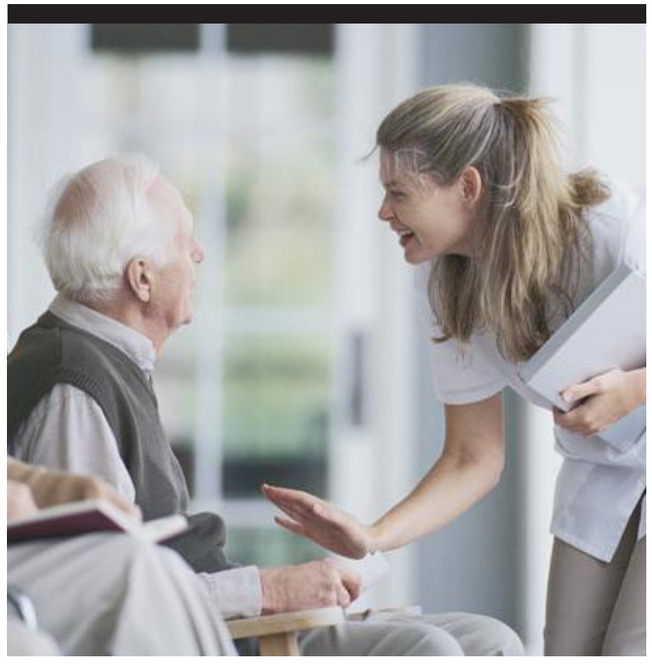
Hotal Azeem Babu
[Nagpur]

कैरियर

संपादन प्रभाग

समाज की सेवा करते हुए संवारें अपना भविष्य

समाजशास्त्र विषय में रुचि रखने वाले और इस विषय से शिक्षा हासिल करने वाले युवाओं के लिए समाज सेवा के माध्यम से लोगों की सेवा करने और जीविका अर्जित करने के अनेक अवसर हैं। इस विषय से जुड़े युवा कैरियर के रूप में सबसे पहले समाज सेवा को चुनते हैं।



यह कैरियर के लिहाज से एक व्यापक क्षेत्र है और इसमें अनेक संभावनाएं हैं। इस क्षेत्र में आने के बाद थोड़ी-सी जानकारी और प्रशिक्षण हासिल करके कार्य के दौरान हुए अनुभव के आधार पर आगे बढ़ा जा सकता है।

समाज सेवा ऐसा क्षेत्र बन चुका है जहां सैकड़ों सामाजिक संगठन अथवा एनजीओ काम कर रहे हैं। इस क्षेत्र से जुड़ कर जहां लोगों की सहायता की जा सकती है, वहीं अच्छी कमाई भी की जा सकती है। वर्तमान में सामाजिक संगठन अथवा एनजीओ रोज़गार का एक बड़ा साधन है। सैकड़ों ऐसे नॉन गवर्नमेंट ऑर्गेनाइज़ेशन हैं जो कई क्षेत्रों में काम कर रहे हैं और इन संस्थाओं से लोगों को रोज़गार मिल रहे हैं।

महिला समस्या, बाल विकास, मानवाधिकार, स्वास्थ्य, समाज, कृषि, पर्यावरण, शिक्षा और संस्कृति आदि क्षेत्र को अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुन सकते हैं। एक आंकड़े के अनुसार देश में लगभग 14 हज़ार एनजीओ काम कर रहे हैं। इनमें 53 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में, 17 प्रतिशत ह्युमन रिसोर्स डेवलपमेंट में, 10 प्रतिशत सोशल जस्टिस एंपावरमेंट, 6 प्रतिशत हेल्थ केयर एंड फैमिली



सेक्टर में और अन्य यूथ और स्पोर्ट्स सेक्टर में कार्यरत हैं।

इस क्षेत्र में जाने के लिए समाजशास्त्र विषय में 12वीं पास या स्नातक होना ज़रूरी है। 12वीं की शिक्षा आर्ट साइड से उत्तीर्ण करने के बाद यदि चाहें तो समाजशास्त्र से स्नातक कर लें। उससे आगे की शिक्षा के लिए इसी विषय से स्नात्कोत्तर, एमफिल और पीएचडी भी कर सकते हैं। शिक्षा हासिल करने के बाद इस क्षेत्र में रोज़गार की संभावनाओं को तलाश किया जा सकता है। यूथ सर्विसेज, पब्लिक रिलेशन, मेंडिसिन एंड लॉ, पॉलिटिक्स काउंसलिंग, एजुकेशन लेबर यूनियन, सिविल सर्विसेज, मीडिया आदि क्षेत्र में अपनी क़िस्मत आजमा सकते हैं।

इसमें पर्सनल रिसर्च करने के अलावा किसी एनजीओ से जुड़ सकते हैं। इसके अलावा प्राइवेट अथवा सरकारी नौकरी के लिए भी प्रयास किए जा सकते हैं। सरकारी नौकरी की बात करें तो समाजशास्त्र सिविल सेवाओं के लिए सबसे उपयुक्त विषय माना जाता है। मास्टर की डिग्री लेने के बाद किसी कॉलेज या यूनिवर्सिटी रिसर्च करने अथवा एक शिक्षक के रूप में पढ़ाने का काम कर सकते हैं। असिस्टेंट प्रोफ़ेसर के तौर पर भी काम करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। आज के समय में बहुत-सी बड़ी संस्थाओं में रिसर्च वर्क होता है और उनको रिसर्च सहायक की ज़रूरत होती है। समाजशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल कर चुके लोग आमतौर पर समाजशास्त्री एकेडमीक संस्थानों में शोधकर्ता के रूप में भी काम करते हैं। इंडस्ट्री में मानव संसाधन विशेषज्ञ के रूप में कार्य करके अच्छा पैसा कमाया जा सकता है।

समाजशास्त्र विषय की जानकारी का उपयोग लेखन एवं स्वतंत्र पत्रकारिता में किया जा सकता है। यह विषय युवाओं में घटनाओं और तथ्यों का विश्लेषण करने की क्षमता और योग्यता पैदा करता है, जिससे लेखन के ज़रिये अनेक सामाजिक मुद्दों की ओर लोगों का ध्यान खींचा जा सकता है। देश में हज़ारों की संख्या में विदेशी टूरिस्ट घूमने आते हैं। यात्रा स्थलों की सामाजिक और ऐतिहासिक जानकारी हासिल कर ट्रैवल गाइड के रूप में काम किया जा सकता है। कैरियर के लिहाज से यह एक बड़ा क्षेत्र है और भारत जैसी विविधताओं से भरे देश में इसकी अपार संभावनाएं हैं। अपनी रुचि के अनुसार अपने क्षेत्र का चुनाव कर सकते हैं। शुरू में फ्रेशर के रूप में अपना काम की शुरुआत कर सकते हैं। धीरे-धीरे अनुभव के आधार पर पद और पैसा हासिल किया जा सकता है। ■■



डॉ. फ़रहत हुसैन

इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं

इस्लाम धर्म से डरने की आवश्यकता नहीं है। यह सब धर्मों के आदर की शिक्षा देता है एवं सभी धर्म ग्रंथों को मान्यता देता है (क़ुरआन 2:4)। सभी धर्म गुरुओं (ईशदूतों) में आस्था का आदेश देता है (क़ुरआन 2:285) । यह भी आदेश देता है कि धर्म के मामले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं (क़ुरआन 2:256)। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए रहमत और दयालुता बताया गया है (21:107)। उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानव जाति के लिए हैं। संस्कृत के विद्वानों के शोधानुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन की भविष्यवाणी भारतीय धर्म-ग्रंथों में उल्लेखित हैं (देखिए पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध)। क़ुरआन की शिक्षाएं समस्त इंसानों के लिए हैं। ईशभक्ति, ईशपरायणता, परलोक में मोक्ष की प्राप्ति, संसार में इंसाफ़, बराबरी, शोषण मुक्त, प्रेम तथा दया भाव से परिपूर्ण सामाजिक जीवन एवं समृद्ध आर्थिक वातावरण पर बल दिया गया है।



हां प्रत्येक समाज की भांति मुस्लिम समाज में भी कुछ लोग सही सिद्धांतों से हटकर असत्य, अन्याय तथा शोषण का मार्ग अपना सकते हैं, हिंसा और आतंक जैसे कार्यों तक किए जा सकते हैं। ऐसे लोगों का समर्थन तो दूर उन पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही का मुस्लिम समाज ने सदा आह्वान किया है जो एक निष्पक्ष न्यायिक प्रणाली के माध्यम से हो, न की भीड़ तंत्र या पूर्वाग्रहग्रस्त लोगों के द्वारा, साथ ही मुस्लिम समाज की इस ज़िम्मेंदारी से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वह समाज सुधार के कार्य को दृढ़ता से करता रहे तथा हर प्रकार की

नकारात्मक सोच से लोगों को बचाए। मुसलमानों का संपूर्ण जीवन क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुरूप हो, वह सबके लिए रहमत साबित हो, समाज तथा अपने वतन के विकास एवं उत्थान में तथा यहां अमन-शांति व सदाचार के माहौल को बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें। यही इस्लाम की शिक्षा है और ईश्वर को भी यही पसंद है।

मुसलमानों की ज़िम्मेदारी

मुसलमानों के धर्म गुरुओं, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वह देशवासी भाई-बहनों की भ्रांतियों को उनके मन के काल्पनिक या मीडिया द्वारा बिठाए गए भय को दूर करने का प्रयास करें तथा उन्हें वास्तविकता से अवगत कराएं। आम मुसलमान भी अपने कार्य, व्यवहार एवं आचरण द्वारा लोगों को इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित कराएं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न्याय के मार्ग से विचलित न हो। किसी प्रतिक्रिया या प्रतिशोध का शिकार न हो और अल्लाह पर पूरा भरोसा रखें।

सकारात्मक वातावरण ज़रूरी

जैसा कि उल्लेख किया गया है समाज में भय, नफ़रत तथा दुश्मनी के इस वातावरण से हो सकता है कुछ लोगों को सामयिक रूप से कुछ राजनीतिक लाभ प्राप्त हो जाए, परंतु यह देश तथा समाज के लिए घातक हैं। सभ्य समाज में भीड़ द्वारा हत्याएं, नवजवानों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग, एक समुदाय विशेष को प्रत्येक मुद्दे पर दोषी मानते हुए एक 'विलन' बनाकर पेश करना, इतिहास की मनगढ़ंत व्याख्या करना, यह प्रचारित करना कि इस्लाम और मुसलमानों में कुछ भी भला नहीं है तथा मुसलमानों के योगदान को स्वीकार



देश में सभी धर्मों और संप्रदायों के बीच वही आपसी विश्वास, सौहार्द एवं भाईचारा स्थापित हो जाए, जिसके लिए भारत विख्यात रहा है।

करने के स्थान पर उनमें केवल बुराई ही देखना और दिखाना, कुछ गिने-चुने लोगों के अपराधों के लिए पूरे समुदाय को 'गुनहगार' घोषित कर देना किसी भी प्रकार उचित एवं न्यायसंगत नहीं है। इससे बड़ी त्रासदी और क्या होगी कि ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाले अत्याचारों का महिमामंडन किया जाए तथा उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए।

न्यायप्रिय लोग आगे आएं

इस नकारात्मक सोच से समाज को निकालने के लिए सभी संप्रदायों के प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित न्यायप्रिय लोग आगे आएं। सभी पक्षों के बीच सौहार्द बनाने के लिए संपर्क एवं वार्ता की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए, जिस बड़े पैमाने पर माहौल को बिगाड़ा जा रहा है उसका तुरंत नोटिस लेना चाहिए। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक संस्थाओं को भी देश के वातावरण को सुधारने में सकारात्मक भूमिका के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। इससे पहले कि नफ़रत का विष घातक हो जाए हमें सचेत हो जाना चाहिए। देश में सभी धर्मों और संप्रदायों के बीच वही आपसी विश्वास, सौहार्द एवं भाईचारा स्थापित हो जाए, जिसके लिए भारत विख्यात रहा है। यही वह फार्मूला है जिससे अमन, शांति एवं आर्थिक ख़ुशहाली स्थापित होगी तथा भारत विश्व पटल पर अगुवाई की भूमिका निभाने की स्थिति में होगा। ■■

लक्ष्यों और उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित करने से मनुष्य और मानव समूह अस्थायी समस्याओं और कठिनाइयों में नहीं फंसते। निगाहें जब मंजिल पर टिकी होती हैं तो रास्ते की छोटी-छोटी परेशानियां बेमानी हो जाती हैं। जब हम एक लंबी यात्रा पर निकलते हैं, तो हमारी नज़र गंतव्य पर टिकी होती है, असमान रास्ते, बाधाएँ, गड्ढे और चट्टानें कभी भी हमारे ध्यान का केंद्र नहीं बनती हैं। यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए हम उनसे उतना ही व्यवहार करते हैं, जितना जरूरी है। हमारा फोकस रूट के बजाय डेस्टिनेशन पर है। अगर मंजिल तक पहुंचने का एकमात्र कठिन रास्ता जरूरी है तो हमें यात्रा की कठिनाई की परवाह नहीं है। इसके विपरीत जब हमारी यात्रा व्यर्थ और व्यर्थ हो यानि हम पैदल ही चल रहे हों, रास्ते में आने वाली हर छोटी-बड़ी समस्या हमें आकर्षित करती है। पथ हमारे ध्यान का केंद्र बन जाता है। रास्ते की विषमता हमें परेशान करती है और हम चलने का रास्ता खोज लेते हैं। रास्ते का हर फूल हमें आकर्षित करता है और इसी तरह हर काँटा भी। इससे पता चलता है कि रास्ते में भ्रमित होना इस बात का संकेत है कि यात्रा महत्वहीन, अर्थहीन और व्यर्थ है।

SALFIA UNANI MEDICAL COLLEGE
Darbhanga, Bihar

KANTI Monthly, New Delhi
OCTOBER 2021
Posted on 20-21 September 2021
Published on 18 September 2021
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2021-2023
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2021-2023
Total Pages with Cover: 52

Put Your Efforts & Earn More



Full time/ Part-time Job



Wanted

Dawat Media House (DMH) has designed a new project to generate business and share the profit with its executives. In the first phase, DMH has a plan to appoint part time or full time executives in the cities having a population of more than 10 lakhs.

What do they need to do?

1. Enroll subscription of various publications printed and digital editions.
2. Book the order for Markazi Maktaba books.
3. Get advertisement for the publications.

Necessary training will be provided

Email : mgrdawat@gmail.com | **9891160829**